महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 | अंक - 16 | मुंबई, 16 सितंबर से 30 सितंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

लघु उद्योग औद्योगिक विकास की रीड - नरेंद्र मोदी

अहमदाबाद। मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लघु एवं मध्यम उद्योगों (एसएमई) को आर्थिक नीतियों में निर्णायक और विश्व प्रभावक करार देते हुए कहा कि लघु एवं मध्यम उद्योग के मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर में भारत की समग्रतया 19 फीसदी विकास दर के मुकाबले गुजरात की विकास दर 85 फीसदी है। लघु उद्योग और मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर को औद्योगिक विकस की रीढ़ करार देते हुए श्री मोदी ने कहा कि विकास दर में यह वृद्धि राज्य के लघु उद्योगों को गत दस वर्षों में प्रोत्साहन देने के राज्य सरकार के सुविचारित प्रयासों का परिणाम है। वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट- 2013 के दूसरे दिन आज महात्मा मंदिर में स्माल एंड मीडियम इंटरप्राइज का कन्वेन्शन आयोजित किया गया था। इस विशाल एसएमई कन्वेन्शन में देश भर के लघु उद्यमियों ने भाग लिया था। **(शेष पृष्ठ २ पर)**

गांधी नगर में लगा कृषी विकास का मेला

वाइब्रेंट गुजरात 2013। वाइब्रेंट गुजरात के अंतर्गत आयोजित ग्लोबल ट्रेड शो के उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह बात गांधी नगर में कही। नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुनिया भर की कंपनियों के लिये यह एक बहुत बड़ा प्लेटफॉर्म है निवेश के लिये। यहां पर मंथन होगा, कई सारे एमओयू साइन होंगे और देश के विकास में नई रूपरेखा तैयार करते हुए रोजगार जन्म लेगा। यहां पर उद्योगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। उन्हें अपनी क्षमता और व्यापार को बढ़ाने का मौका मिलेगा। इसके लिये गुजरात पूरी तरह तैयार है। उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा था जब इस प्रकार की ट्रेड फेयर दिल्ली तक सीमित रहती थीं, लेकिन आज गुजरात में हर व्यक्ति इसके बारे में जानता है और समझता है। हमने दुनिया भर की कंपनी को न्योता सिर्फ गुजरात के लिये नहीं दिया है, बल्कि अन्य राज्यों में भी वो जा सकती हैं और यदि चाहें तो अपनी इकाइय्यां भी खोल सकती हैं। इसके लिये उन्हें उस राज्य की सरकार से बात करनी होगी। इंडिया ट्रेड प्रोमोशन ऑर्गनाइजेशन की अध्यक्ष रीता मेनन भी इस मौके पर मौजूद थीं।

भूमि अधिग्रहण बिल लोकसभा में पारित

दिल्ली, खाद्य सुरक्षा बिल के बाद अब भूमि अधिग्रहण बिल को भी लंबे अर्से के बाद लोकसभा में हरी झंडी मिल ही गई।जिसके माध्यम से किसानों को उनकी जमीन का उचित मुआवजा मिलने का अधिकार प्राप्त हुआ है। इस बिल को भी काफी विरोध झेलना पड़ा पर आखिरकार मतदान करके यह बिल पारित कर दिया गया। लोकसभा में हुए मतदान में बिल के पक्ष में 216 और विरोध में 19 मत पड़े और बिल पास हो गया। राज्यसभा से यह बिल पास होने के बाद नया भूमि अर्जन कानून 119 वर्ष पुराने भूमि अधिग्रहण कानून की जगह लेगा। नया कानून किसी भी हालत में किसानों की जमीन के जबरन अधिग्रहण करने की इजाजत नहीं देता। इस बिल में किस तरह **(शेष पृष्ठ २ पर)**

राज्यसभा से भी पारित हुआ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक

नई दिल्ली : भूख से लड़ने के लिए दुनिया के सबसे बडे कार्यक्रम को हरी झंडी देते हुए संसद ने सोमवार को ऐतिहासिक राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक को पारित कर दिया जिसमें देश की दो तिहाई अबादी को भारी सब्सिड़ी वाला खाद्यान्न अधिकार के तौर पर प्रदान करने का प्रावधान है।

इस महत्वाकांक्षी विधेयक को सरकार पासा पलट देने वाला उपाय मान रही है और इससे देश की ८२ करोड़ आबादी को फायदा मिलेगा। राष्ट्रपति से अनुमोदन मिलने के बाद यह विधेयक कानून बन जायेगा।

जल सत्याग्रहियों की चमड़ी पड़ी सफेद, सरकार बेखबर

भोपाल : मध्य प्रदेश में इंदिरा सागर बांध प्रभावितों का जल सत्याग्रह चौथे दिन भी जारी रहा। अपने हक की खातिर जल सत्याग्रह कर रहे कई लोगों की चमड़ी सफेद पड़ने लगी है। वहीं इंदिरा सागर का जलस्तर बढ़ाए जाने से कई गांव की जमीन व घर पानी में डूबने लगे है।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

दिल्ली: कूड़े के ढ़ेर में तब्दील हो गया खूबसूरत पार्क

नई दिल्ली, किसी भी इलाके में पार्क ना सिर्फ उस जगह की खूबसूरती बढ़ाता है, बल्कि लोगों की जिंदगी का एक अहम हिस्सा भी होता है। बच्चों के लिए खेलने से लेकर, बड़े बुजुर्गों के घूमने टहलने की ये खास जगह होती है। दिल्ली के शाहदरा में रहने वाले मनोज खरबंदा बता रहे है कैसे उनके इलाके में एक पार्क तो है, लेकिन वो लोगों के लिए सहूलियत की जगह मुसीबत बना हुआ है। कूड़े के ढेर को देखकर शायद ही कोई यकीन करेगा कि ये एक पार्क है। दिल्ली के शाहदरा इलाके के आर ब्लॉक का पार्क, जिसका २००२ में बड़े जोर शोर से उद्घाटन हुआ था। तब ये बहुत खूबसूरत पार्क था, और लोग शाम को वहां घूमने फिरने आते थे। लेकिन देखते ही देखते हालात बिगड़ते गए, और अब हाल ये है कि यहां कोई कदम भी नहीं रखना चाहता। मनोज कुमार खरबंदा, दिल्ली के शाहदरा में रहने वाले है। मनोज आज सिटिज़न जर्नलिस्ट बने है ताकि अपने पड़ोस के बदहाल पार्क को दुबारा इस लायक बनवा सकें कि यहां लोग घूमने फिरने आ सकें। पार्क में आज जहां गंदगी नजर आ रही है वहां कभी हरी भरी घास बिछी थी। चारो तरफ खूबसूरत पौधे थे। यहां माली की नियुक्ति थी, जो जो इनकी देखरेख करते थे। लेकिन फिर सब वीरान होता गया। पहले फव्वारे चलना बंद हुए और फिर धीरे धीरे फव्वारों के पाइप और नॉज़ल ही कोई उखाड़ कर ले गया। पिछले ४ साल से ये पार्क ऐसा ही गंदा पड़ा है। चारदीवारी कई जगह से टूटी हुई है। कचरे की गार्डा्यां पार्क के अंदर तक कूड़ा डाल कर जाती है। पार्क के अंदर लोग शौच करने जाते है। दिन भर यहां बैठ कर लोग नशा करते है। ये पार्क एससीडी के पास है, जिस नाते इसके रखरखाव की जिम्मेदारी उनकी है। लेकिन यहां की सुध किसी को नहीं है। यहां पानी के लिए पंप सेट आज तक लगा है, लेकिन माली कब आते है, कोई नहीं जानता। इस संबंध में मनोज ने कई बार एमसीडी के अधिकारियों को चिट्ठियां लिखीं, लेकिन कहीं से कोई जवाब नहीं आया।

खाद्य सुरक्षा मिशन में तिलहनी फसलें भी शामिल

खाद्य तेलों के उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए इन फसलों की पैदावार बढ़ाने पर भी फोकस होगा सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) के तहत चावल, गेहूं और दलहन के बाद अब तिलहनों की पैदावार बढ़ाने पर जोर देगी। केंद्र सरकार ने १२वीं पंचवर्षीय योजना में एनएफएसएम में नेशनल मिशन ऑयल सीड ऑयल पाम (एनएमओओपी) को भी शामिल कर लिया है।

कृषि आयुक्त डॉ. जे एस संधू ने बिजनेस भास्कर को बताया कि देश में खाद्य तेलों की सालाना कुल खपत का करीब ५० फीसदी आयात करना पडता है। ऐसे में आयात पर निर्भरता कम करने के लिए एनएमओओपी को भी एनएफएसएम में शामिल किया गया है। एनएफएसएम के तहत जिस तरह से चावल, गेहूं और दलहन की पैदावार में बढ़ोतरी हुई है, उसी तरह से तिलहनों की पैदावार बढ़ाने पर भी जोर दिया जायेगा। एनएफएसएम के तहत चयनित किए गए जिलों में किसानों को तिलहनों के प्रमाणित बीजों का वितरण किया जायेगा, जिससे प्रति हैक्टेयर पैदावार में बढ़ोतरी होगी। 12वीं पंचवर्षीय योजना में एनएफएसएम के तहत कुल 12,350 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। तिलहनों की प्रमुख फसल मूंगफली में सीड रिप्लेशमेंट की दर लगातार बढ़ रही है तथा चालू खरीफ में बढ़कर 33-34 फीसदी हो गई है।

भूमि अधिग्रहण विधेयक सिर्फ चुनावी मकसद-विपक्ष

नई दिल्ली: बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और समाजवादी पार्टी (सपा) ने भूमि अधिग्रहण विधेयक पर राज्यसभा में चल रही चर्चा के दौरान इसके चुनावी निहितार्थ होने का आरोप लगाया। बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि तथापि उनकी पार्टी आधारभूत परियोजना के लिए अधिगृहीत की जाने वाली भूमि के एवज में किसानों को अधिक मुआवजा मुहैया कराने की मांग करने वाले विधेयक का समर्थन करेगी।

आवश्यकता है

प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए संपर्क

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

कृषि से विमुख होता आज का युवा किसान

हम एक कृषि प्रधान देश मे रहते है। कृषि मानव सभ्यता के मूल में रही है। इसिलिए नदी के किनारो पर मानव सभ्यता पनपी। कृषि का महत्व सभी जानते है। फिर भी कृषि कभी भी चर्चा का विषय नही रहा। भारत में किसानो की आत्महत्याएं बताती रही है कि हमारा कृषक किन परिस्तिथीयों का सामना करते रहे है। भारत की जहां 70 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। वहां हमें दीर्घ कालीन योजनाओं के बारे में सोचना होगा।

लगातार बढते शहरीकरण ने कृषि को तो उपेषित किया ही साथ ही साथ मिट्टी का उपजाऊपन भी खत्म कर दिया। शहरीकरण औद्योगिकरण रासायनिक उर्वरको के असंतुलित उपयोग,नदी के होने वाले जल,प्लावन के साथ साथ ईट निर्माण व बिजली घर से निकलने वाली राख भी मिट्टी का ऊपजाऊ होना निगल रही है। मिट्टी की ईट बनाने वाले देशों में भारत दुसरे स्थान पर है। भारत हर साल 250 अरब ईंटे बनाता है। इसमें 52 करोड टन उपजाऊ मिट्टी उपयोग में ली जाती है। और उसका नतीजा यह होता है कि हर साल उपजाऊ जमीन का 50 हजार एकड रकबा हमेशा के लिए परती में तब्दील हो जाता है। लगातार हम हर तरह से भूमिका दोहन करते रहे है।

अब भी दीर्घ कालीन उपायो के बारे में विचार नही किया गया तो स्थिती की भयानकता का अंदाजा लगाना मुश्किल नही होगा। आज का युवा कृषि से विमुख होता जा रहा है। और स्थानो पर अपना भविष्य तलाश रहा है। ऐसे में आने वाले समय में खाद्यदान की समस्या बढेगी ही। केवल सरकारी कागजो में बनने वाली योजनाए या किसान कॉल सेंटर से काम नही चलेगा। जरूरी है कृषि का महत्व समझते हुए कृषको के प्रति संवेदनशील होने का।

ऋतु कपिल (कार्यकारी संपादक)

लघु उद्योग औद्योगिक....

उत्तम लघु उद्यमियों को श्रेष्ठता प्रमाण पत्र इनायत करते हुए श्री मोदी ने कहा कि मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर में लघु उद्योग क्षेत्र ने अपनी क्षमता को साबित किया है। लेकिन उसके सर्वग्राही सर्वपोषक विकास के लिए चिंतन नहीं किया जाता। लघु उद्योगों के विकास में अवरोध अनेक छोटी-बड़ी समस्याओं के निराकरण के लिए छोटे-मोटे प्रयास कामयाब नहीं हो सकते। लघु और मध्यम उद्योगों को स्पर्धात्मक बाजारों में प्रभावी बनाने के लिए समयानुकूल टेक्नोलॉजी और रिसर्च पर ध्यान केन्द्रित करने पर मुख्यमंत्री ने बल दिया। स्माल-मीडियम इंटरप्राइज के विकास के प्रोत्साहन की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने परंपरागत लघु उद्योगों के मैन्युफेक्चरिंग क्षेत्र में समझबूझ से नये आयाम और आविष्कार विकसित किए हैं। जिसके कारण उत्पादनों का दायरा काफी विकसित हुआ है। इसका सातत्यपूर्वक संवर्धन करना आवश्यक है। एसएमई कन्वेन्शन आयोजित लघु उद्योग हमारे देश की अर्थव्यवस्था और रोजगार निर्माण के अधिकतम अवसर उपलब्ध करवाते हैं।

भूमि अधिग्रहण...

की भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा इसका अधिकार राज्यों को दिया गया है। साथ ही राज्यों को अपना भूमि अधिग्रहण कानून बनाने की भी छूट होगी। मगर राज्यों के कानून में मुआवजा और पुनर्वास केंद्रीय कानून के बराबर ही होंगेइस बिल में करीबन 158 छोटे बड़े संशोधन किए गए हैं। इसमें १३ संशोधन स्थायी समिति और 13 संशोधन शरद पवार की अध्यक्षता वाली समिति और दो संशोधन विपक्ष की नेता सुषमा स्वराज की संस्तुति पर किए गए हैं। ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश के मुताबिक कानून में न सिर्फ जमीन के उचित मुआवजे का प्रावधान किया गया है बल्कि भू स्वामियों के पुनर्वास और पुनर्स्थापन की पूरी व्यवस्था की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिग्रहण पर किसानों को बाज़ार भाव से चार गुना दाम मिलेंगे जबकि शहरी इलाकों में जमीन अधिग्रहण पर भू स्वामी को बाजार भाव से दोगुने दाम मिल सकेंगे। प्राइवेट कंपनियां अगर जमीन अधिग्रहीत करती हैं तो उन्हें वहां के ८० स्थानीय लोगों की रजामंदी जरूरी होगी। जमीन के मालिकों और ज़मीन पर आश्रितों के लिए एक विस्तृत पुनर्वास पैकेज की व्यवस्था की गई है। साथ ही जयराम रमेश ने कहा कि आकस्मिक कार्यों के नाम पर किसानों की बहुफसली जमीन का जबरन अधिग्रहण नहीं किया जा सकता है। विधेयक पूरी तरह से किसानों की जमीन की रक्षा करनेवाला है। इस कानून में अधिग्रहण के कारण जीविका खोने वालों को 12 महीने के लिए प्रति परिवार तीन हज़ार रुपये प्रतिमाह जीवन निर्वाह भत्ता दिए जाने का प्रावधान है। पचास हजार का पुनर्स्थापना भत्ता, प्रभावित परिवार को ग्रामीण क्षेत्र में १५० वर्ग मीटर में मकान, शहरी क्षेत्रों में 50 वर्गमीटर ज़मीन पर बना बनाया मकान दिए जाने का प्रावधान भी इस कानून में किया गया है।

किसानों और भारतीय युवाओं का कृषि से पलायन

हुकुमराम चौधरी

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि क्षेत्र को नित नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है

समस्याएँ जिनसे किसान जूझ रहे हैं

1गिरताभूजलस्तर:-

2) मौसम की अनिश्चितता:

3महंगाऋण :-

4अनियमितग्रामीणबाजार:-

5महंगाई :-

6छोटेवबिखरीजोतें :-

7) सूचना की कमी :-

8) बहुतेरे बिचौलिया जो सिर्फ मूल्य बढ़ाते हैं लाभ नहीं

9)नियंत्रितकीमतें: -

10) मिटटी: -

11) कमजोर बुनियादी ढांचा: -

12) अपर्याप्त सिंचाई सुविधा:

13)वर्तमान कृषि का उत्पादन संचालित होना: -

14) जीवन की गुणवत्ता: -

15) फसल बीमा

16) कृषि विपणन में समस्याएँ:

इन समस्याओं से कैसे निपटा जाये

1) किसानों के बाजार जोखिम को कम करना: -

(I)एम. एस. पी. (न्यूनतम समर्थन मूल्य) एमएसपी को लागू करने में होने वाली समस्याओं के बावजूद इसने अधिक उपज वाले राज्यों के किसानों को उनके जोखिम को बहुत हद तक कम करने में बड़ी भूमिका निभाई है. एमएसपी नीति को प्रभावी तरीके से लागू करके किसानों की परेशानियों को कम करने का एक अच्छा विकल्प मिल सकता है.

(II)अनुबंध कृषि प्रबंध जो की भविष्य के लिए मूल्य निर्धारित करने से सम्बंधित है.

(III) कृषि आय बीमा योजना (एफआईआई) 2003 -04 kfो में प्रायोगिक तौर पर देश 18 के जिलों में शुरू किया गया था एवं 2004 -05 में इसका 100 कुल जिलों में विस्तार कर दिया गया. एफआईआई उपज व मूल्य दोनों जोखिम से सुरक्षा प्रदान करती है. यह स्कीम ऋणी किसानों के लिए अनिवार्य जबकि बाकियों के लिए ऐक्छिक है.

2)सुक्ष्म शुद्ध खेती: -

3) नई संस्थागत व्यवस्था -

4) सीएसीपी का पुनर्निर्माण:

5) आगतों के मूल्यों का नियंत्रण:

6) सब्सिडी- प्रतेक़ किसान की अलाभदायक क़ीमतों , ऋण की अनुपलभता, उच्च लागत एवं अन्य विपरीत कारणों से होने वाली हानि के कारण सब्सिडी की आवस्यकता है.

7) नदियों को जोड़ना एक क्रांतिकारी सोंच

8) किसानों को उद्यमी समझा जाये: -

9) उन्नत मौसम विज्ञानं विभाग कि जरुरत:

10) किसान परिवारों को सीधा नगद हस्तांतरण:

11) पी. पी. पी. मॉडल लागू करना:

12) विपणन निति में सुधर:

13) विस्तार सेवाओं को बढ़ने के लिए निजी संचालकों को सहायता

14) किसानों व सरकारी महकमों एक बीच पारदर्शीता लायें

15) जल विभाजन प्रबंधन: -

16) कृषि विज्ञानं एवं प्रद्योगिकी में निवेश द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन में भरी वृद्धि करके बढती कीमतों का मुकाबला किया जा सकता है.

17) प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि:

शाकाहार का अध्यात्म विज्ञान

कु. मधु, डॉ. सियाराम विश्वकर्मा एव डॉ. जी. पी. वर्मा
आनुवंशिकी एव पादप प्रजनन विभाग
नरेन्द्र देव कृषि एव प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फ़ैजाबाद -224229 उ.प्र.

अध्यात्म क्या कहता है ? हमारे पूर्वज कहते है कि वही खाओं जो हितकारी हो, भूख से थोड़ा कम खाओं और त्रृतु के अनुकूल खाओं हमारे शारीर में पाँच कोष होते है :- प्रथम अन्नमय कोष, द्वितीय मनमोय, तृतीय प्राणमय, चतुर्थ विज्ञानमय और पंचम आनन्दमय कोष अन्नमय कोष स्थूल शारीर का आधार होता है, अवलम्बंन होता है और नीव होता है कहा भी गया है कि ठजैसा खाये अन्न वैसा रहे मनठ यानी अन्नमय कोष से ही सूक्ष्म शारीर , वाणी, विचार का शोधन होता है आयुर्वेद के मुताविक हमारे भोजन में पांच तत्वों - पृथ्वी, जल अग्नि आकाश व वायु (क्षिति जल, पावक, गगन, समीर पंच रचित यह अधम सरीरा) का समावेश होता है इन तत्वों को अपने -अपने गुण- धर्म में कुल छवों रस मधु (मीठा) ऑवन (खट्टा)लवन (नमकीन) तिक्त (तीखा) कटु (कड़वा) व कस्य (कसैला) होते है भोजन में इन तत्वों के संतुलन से बेहतर सेहत प्राप्त किया जा सकता है आहार विज्ञानियो का कहना है कि सूखे अन्नों, दलहनों और तिलहनो में केवल पृथ्वी तत्व की बहुलता होती है अंकुरित हो जाने पर प्रकृति उन पर अपने विशिष्ट अनुदान बरसाने लगाती है और पृथ्वी तत्व के साथ -साथ उनमे जल, वायु,सूर्य और आकाश तत्व की परिपूर्ण मात्रा में भर जाते है इसके अतिरिक्त प्रकृति अपनी कला और रचना द्वारा इन बीजो को अतिरिक्त प्रोटीन, विटामिन, चिकनाई एव खनिज लवण जैसे तत्वों से भी लबालब भर देती है अंकुरण के उपरान्त अब वह अनाज नहीं रह जाते, वरन अन्न, शाक - सब्जी तीनो की भूमिका एक साथ निभाने लगती है

शाकाहार का वैज्ञानिक आधार (अंकुरित अनाज व दाले):-

आज की भाग -दौड़ की जिन्दगी व बदलती जीवन शैली में आहार का विशिष्ट स्थान है आहार के प्रारम्भिक सिद्वांत का पालन न करना रोंगों को न्योता देना है आवश्यक शक्ति (उर्जा) अर्जित करने के लिए शाकाहार या उसके घटको को ग्रहण करने की कला ऐसी है, जिनका हमारे जीवन, काया और स्वास्थ से गहरा सम्बन्ध भारतीय पोषणविदों ने अंकुरित आन्नों की पोषण क्षमता पर गम्भीरता पूर्वक अनुसंधान किया है और पाया है कि अनाजों और दालों को अंकुरित करने पर उनमे सन्निहित प्राकृतिक शक्तियॉ सक्रिय हो उठती है और उनके पोषण क्षमता में अभिव्रुदी करती है उनमे प्रस्फुटित नई कोपले अतिरिक्त विटामिनों एव खनिज तत्वों से भर जाती है इसमे विटामिन-सी दस गुनी, थायमिन, राइबोफ्लोबिन और निकोटिनिक एसिड दो गुनी हो जाती है अंकुरण से दालों में कुछ हानिकारक तत्वों को विघटन हो जाती है और साथ ही लौह तत्व अपने रासायनिक यौगिको से अलग होकर अधिक मात्रा में शरीर को मिलने लगता है इतना ही नहीं, अंकुरण से बीजों में भी भरी परिवर्तन होता है इस अवस्था से दालों की उपरी परत फट जाती है और काफी नरम पड़ जाती है जिससे कम समय में ही वे आसानी से खाने योग्य बन जाती है कार्बोहाइड्रटस एव प्रोटीन से सम्बन्धित कोशिकाओं के विघटित हो जाने से उन्हें पचाने में ऑतो को विशेष सुविधा रहती है कुछ अनाजों दालों में तीखापन या कसैलापन कम हो जाती है अंकुरित दानो में कैल्शियम, फास्फोरस, लौह तथा विटामिन -ए प्रचुर परिमाण में मिलने के कारन उनकी उपयोगिता शरीर के लिए महत्वपूर्ण बन जाती है इन्सुलिन जैसे रसायन इन बीजो के अंकुरों में अपनी प्राकृतिक अवस्था में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते है फ़लत: डायविटीज के रोंगियो के उपचार में औषधि का कम करती है अंकुरित अनाज सस्ता भी पड़ता है और पाचन एव स्वास्थ सम्बर्धन की दृष्टी से औषधि का कम करता है

आहार केवल साधन है साध्य नहीं:-

निरामिष (शाकाहार) किसी भी व्यक्ति के जीने के शैली भी निर्धारित करता है ऐसे आहार न केवल दिल, बल्कि शरीर को भी मजबूत करते है देखा गया है कि शाकाहार में न केवल हमारे बिचार अच्छे होते है, हममे दया, करुणा व क्षमा आदि जैसे भावों का विकास होता है हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हम लोग केवल जीने के लिए भोजन करते है, न कि भोजन के लिए जीते है इसलिए यह भी कह सकते है कि आहार एक साधन है, साध्य नहीं प्राणी विज्ञान के अनुसार, मनुष्य भी पशु जगत का ही एक प्राणी है , लेकिन उसकी बुद्दि और सवेदनाये ही उसे पशुओं से अलग करती है यह करुणा का ही भाव है , जो उसे अपने आहार के लिए दूसरे प्राणी का प्राण नहीं लेने की प्रेरणा देता है यदि हम गहराई से विचार करे, तो पायेंगे कि हमारी तरह ही दूसरे प्राणियों को भी जीने का प्राकृतिक अधिकार प्राप्त है यह हम सभी जानते है कि ब्रह्म ने ही सभी जीवो की रचना की है और सभी जीवो का आपस में सम्बन्ध भी है इस विचार से किसी भी प्राणी को मारना वास्तव में, स्वय को मरने के बराबर है संत और श्रषियों का मानना है कि यदि हर जीव में ईश्वर का आवास है तो फिर किसी प्राणी को हानि पहुँचाना ईश्वर के अपमान के बराबर ही शाकाहार अहिंसा को जन्म देता है:(अच्छे लोगों के अच्छे बिचार):-

महर्षि रमण ने मन में अच्छे बिचार लेन के लिए सात्विक आहार पर बल दिया है वे मानते है कि इससे हमारे मन का सीधा सम्पर्क आत्मा से हो पता है वेद, उपनिषद व गीता आदि में भी सादा जीवन के लिए सात्विक भोजन के महत्व के बारे में बताया गया है अहिंसा के पाठ में ये बाते भी सामने आई है कि मांसाहार में हिंसा और घृणा के बिज छिपे हुए है, लेकिन निरामिष आहार हमें अहिंसा का पाठ पढाता है पृथ्वी पर एक आहार चक्र चलता रहता है इस चक्र के अनुसार, एक प्राणी दुसरे प्राणी को अपना आहार बनाता है कुछ लोंगो का बिचार है कि यदि यह क्रम न चले तो संतुलन बिगड़ सकता है इस तर्क का खण्डन करते हुए प्राचीन यूनानी दार्शनिक पाइथेगोरस कहते है, बाघ एवं सिंह जैसे जानवरों को अपने भोजन कि लिए शिकार करना आवश्यक होता है, लेकिन मनुष्यों के लिए यह अपराध है यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के प्रथम मन्त्र में पशुओं को मारने के बजाय उनकी रक्षा करने कि बात कही गई हैयदि जीवन प्रकृति है तो जीवन का नाश बिकृति है हम अपनी भूख मिटने के लिए भोजन तो करते है, लेकिन सच तो यह है कि इससे हमारी आत्मा भी तृप्ति होती है यहाँ तक कि स्वाथ्य विज्ञान के मूर्धन्य विद्वान वसर मेकफेडेन का कथन है कि ठअप्राकृतिक खान-पान ही मनुष्य की बिमारियों का मूल कारन है खान-पान के आधुनिक तौर -तरीके ही घातक रोंगों को जन्म दे रहे है विशेष के अनुसार मांसाहार के सेवन से ही मन एव शारीर की भावनाये दूषित हो रही है वैज्ञानिको का दल भी अब यह मानने लगा है कि भावनायें दूषित हो रही है वैज्ञानिको का दल भी अब यह मानने लगा है कि हिंसक व्यवहार का शरीर के रासायनिक असंतुलन से सीधा सम्बन्ध होता है हिंसक लोंगो में तांबे कि मात्रा अधिक एव जस्ते कि मात्रा कम होती है ये तत्व आचरण को प्रभावित करते है क्योंकि शरीर इनका इस्तेमाल मस्तिष्क के रासायनिक ट्रांसमीटरों के निर्माण के लिए करता है तांबा व जस्ते की मस्तिष्क के हिप्पोकैम्पस, नामक हिस्से में जमा होने की प्रवुत्ति के कारण ही दुराचार की भावना बढ़ती है नई -नई बीमारियों- बर्डफ्लू- सार्स,मैडकाउ और स्वाइनफ्लू जैसी घातक बिमारियों के जनक पशु और पक्षी रहे है बर्ड फ्लू का वायरस मुर्गे -मुर्गियों के जरिये, सार्स का वायरस (एच 1 एन 1) सूअरों के जरिये फैला है मनुष्य के इन घातक बिमारियों की चपेट में आने का एक मात्र कारण इन जन्तुओंऔर पक्षियों के मांस का सेवन करना है इस तरह सात्विक भोजन न सिर्फ मनुष्य की गन्दी भावनाओं को नियन्त्रित करता है , बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रदान करता

शाकाहार का विचारों पर गहरा प्रभाव :-

निरामिष आहार से हमारे विचार प्रभावित होते है यदि हम मन ,कर्म और बचन से पवित्र होने चाहते है तो इसके लिए हमें शाकाहार, यानि साग-सब्जी से पूर्ण आहार लेना चाहिए वास्तव में ज्यादातर इन्सान के मन के एक कोने में पशु जैसा व्यवहार छुपा रहता है एसलिय यदि हमें उस पशुता से मुक्त होना है तो मांसाहार का त्याग करना ही होगा हमें न केवल अपनी जीभ के स्वाद के लिए दुसरे जीवों को हानि पहुँचाने से बचना होगा, बल्कि उनकी रक्षा के लिए लगातार प्रयास भी करते रहना होगा सभी धर्म -ग्रन्थों में निरामिष आहार को ही सबसे अच्छा आहार मन गया है वैसे संत, महापुरुष भी मानते है , बल्कि दया और धैर्य जैसे महँ गुण भी हमारे अन्दर विकसित हो जाते वैज्ञानिक मानते है कि शाकाहार न केवल फाइबर (रेशा) कार्बोहाइड्रटस, विटामिन और प्रमुख खनिज पोषक तत्वों (मिनिरल्स) से भरपूर होते है, बल्कि इसमे उचित मात्रा में प्रोटीन और फैटस भी मौजूद होते है,शाकाहारी लोगों में रोंगों से लड़ने कि क्षमता अधिक होती है इसलिए दिल और पाचन से सम्बन्धित समस्याये शाकाहारियों में कम पाइ जाती है आप जानते होंगे कि पचाने में हमारा शरीरद्भ्-द्भ्न्‍थ घन्टे अधिक समय लेता है , साथ अधिक उर्जा भी व्यय होती है : उर्जा पाने कि जगह हमारी उर्जा का हास् होता

अंकुरित पदार्थो (अनाजों दलों)के बनाने का सरल व सस्ता पड़ता है तथा सुपाच्य भी होता है प्राय:कम लागत में ही एक इन्सान का दिन भर का सात्विक आहार जुट जाता है आहार विशेषज्ञा ने १० इंसानों.के लिए संतुलित अंकुरित अन्नों की एक आहार तालिका प्रस्तुत की है उसके अनुसार - गेहूँ व जौ ५० - ५० ग्राम, चना,मूँग, ज्व्वार- बाजरा एव ,मूँगफली प्रत्येक के ५० -५० ग्राम मात्र में लेकर सबको सम्मिलित रूप में साफ पानी में १२ घन्टे (रातभर) भिंगोकर रखने के उपरान्त सुबह पानी से निकालकर १२ घन्टे तक किसी मोटे कपडे में लपेटकर रख दे अधिक जीवन्त बनाने के लिए इसे खिड़की के पास लटकाकर रखा जा सकता है जहाँ से हल्की रोशनी धुप आ रही हो कपड़ा सुखाने न पाए ध्यान करते रहे हल्की पानी की बूंदे छिड़क देवे ३६ घण्टे बाद अच्छा सा अंकुरण निकल आता है श्रतु प्रभाव के कारण यह समय कम या ज्यादा लग सकता है यदि मूँगफली न मिलता हो तो उसकी जगह सोयाबीन ले सकते है यह थोड़ा समय लेता है, अंकुरण कराने में एसलिय इसे अलग से भिंगोकर अंकुरण करये, अच्छा रहेगा अंकुरित अन्नों को स्वादिष्ट एव रुचिकर भी बनाया जा सकता है इसमे टमाटर, मूली, गाजर, खीरा, ककड़ी, सलाद कि पत्ती, हरी मिर्च, धनिया, अदरक, पुदीना आदि को बारीक़ काट कर मिलाया जा सकता है इसके अतिरिक्त भुना जीरा व स्वादानुसार नमक ऊपर से छिड़कर जायकेदार नास्ता बनाया जा सकता है इस अंकुरित अनाजों दालों को मिठा, मधुर बनाने के लिए चुकन्दर, खजूर, नारियल, नींबू, अंगूर, इलायची इत्यादी डाल देने पर पुष्टकारक व्यंजन तैयार हो जाता है अनुसंधारण पोषण वैज्ञानिकोका कहना है कि ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ जैसे अन्न , चना, मूँग, मटर जैसी दाले व मेंथी, तिल मूँगफली आदि तिलहनों को अंकुरित अवस्था में ग्रहण कराने पर सामान्य आहार कि जगह ये ज्यादा लाभदायक सिद्ध हुए इसी तरह सेम जैसी सब्जियों के अंकुरित दानो में कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन तथा विटामिन -ए प्रचुर मात्रा में मिलने के कारण उनकी उपयोगिता अब महत्वपूर्ण हो गई है इन्सुलिन जैसे रसायन इन बीजों के अंकुरों में अपनी प्राकृतिक अवस्था में पर्याप्त मात्रा में पाया जाते है फलत: डायविटिज के रोगियों के उपचार में औषधि का कम करते है अंकुरों को पीसकर उसका रस निकालकर प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में पीने से संतोषजनक परिणाम प्राप्त हुए स्वास्थ विशेषज्ञा के कुछ देशी व नए नुख्शे :-

1 . भोजन में पर्याप्त मात्रा में फल व हरी सब्जियों को सामिल करें गरीब व्यक्ति सामायिक फल सब्जी उपभोग कर सकते है

2 . आमाशय को 1 / 3 भाग ठोस भोजन से, 1 / 3 भाग अर्द्धतरल पदार्थ से भरे परन्तु १ /३ भाग खाली रखे

३ . नियत समय, नियत मात्रा में श्रतुनुसार भोजन करे

4 . अधिक तली -भुनी व तीक्ष्ण आहार लेने से परहेज करे यह एसिडिटी को जन्म देता है

5 . शारीर तापक्रम से थोड़ा अधिक गर्म भोजन हितकारी होता है यह जल्दी पचता है/ जठराग्नि प्रदीप्त करता है और कफ को दूर करता है

6 . क्षार एव विटामिनयुक्त आहार में सब्जी व फल कि मात्रा, गेहूँ,- चावल -आलू - दाल आदि से तिगुना होना चाहिए

7 . रसयुक्त सब्जी और दाल भोजन में ठीक रहता है सूखे भोजन से आमाशय में जलन व रिक्त मिश्रण में बाधा पहुंचती ह

8 . ध्यान रखे कि खाना पचने पर ही पोषण मिलता है तो खाने को आधा,पानी को दूना, कसरत (योग) को तीन गुना व हँसने को चौगुना करे यही है स्वस्थ जीवन उच्च बिचारो का राज

मोदी सरकार की बाहरी किसानों से बेरुखी

जींद गुजरात में जल्द ही बहरी राज्यों से आये किसानों पर गाज गिरनेवाली है क्यूंकि गुजरात सरकार ने 1973 रेवन्यू विभाग का हवाला देते हुए बाहरी किसानों की जो गुजरात में जमीन है उनको जब्त करने के निर्देश दिए है। इसमें हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के किसानों को बड़ा झटका लगनेवाला है

गुजरात सरकार के रवैये के विरोधमें भारतीय किसान यूनियन ने शनिवार को मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजकर हरियाणा सेउच्च स्तरीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल गुजरात भेजने की मांग की है। ताकि गुजरात में खेतीबाड़ी करने वाले हरियाणा के किसानों को बर्बाद होने से बचाया जा सके।

भारतीय किसान यूनियन द्वारा दिए गए ज्ञापन में बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने सीमा पर शहीद हुए सैनिक परिवारों को गुजरात में काफी जमीन अलॉट की थी। मौजूदा समय में लगभग डेढ़ लाख एकड़ जमीन पर हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के उन्हीं शहीद सैनिकों के परिजन व रिश्तेदार खेती कर रहे थे। इस जगह पर ये किसान पूरी तरह से बस गए है सिक्ख समाज के लोगों ने 25 वर्षो से गुरुद्वारे का निर्माण किया हुआ है। हरियाणा के किसानों ने पांच एकड़ में धर्मशाला बनाई हुई है।

कवर्ड शेड भी बनेगे बोर्ड की मंजूरी

पिपरिया. बदहाल हो चुकी कृषि मंडी रोड निर्माण के लिए मंडी बोर्ड भोपाल से तकनीकी स्वीकृति मिल गई है। यह स्वीकृति नहीं मिलने के कारण अब तक मामला लटका हुआ था। लेकिन अब सड़क निर्माण की प्रक्रिया में तेजी आ जाएगी। टेंडर बुलाकर कांट्रेक्टर तय होकर रोड बनना शुरू हो जाएगी।

टेंडर के लिए करीब 15 दिन का समय दिया जाता है। मंडी सचिव ऋतु गढ़वाल ने बताया कि मंगलवार तक रोड निर्माण के लिए टेंडर कॉल हो जाएंगे। निर्माण ठेकेदार तय होने के बाद रोड बनना शुरू हो जाएगी। मंडी अध्यक्ष दिनेश पटेल ने बताया कि मंडी रोड करीब 60 लाख रुपए की लागत से बनेगी। रोड सीमेंट की बनेगी। गौरतलब है कि रोड करीब 1200 मीटर लंबी है। लेकिन 400 मीटर का हिस्सा बेहद गड्ढों वाला और जर्जर है। शेष 800 मीटर सड़क की मरम्मत मंडी प्रशासन कराएगा। मरम्मत के लिए करीब 50 हजार रुपए का प्रावधान रखा गया है। लंबे अर्से से यह सड़क उखड़ चुकी है। किसान, व्यापरियों और आम लोगों को आने-जाने में असुविधा उठानी पड़ रही है। पूरी रोड पर बड़े-बड़े गड्ढे हैं। इनमें मिट्टी का पुराव भी कराया लेकिन दिक्कतें कम नहीं हुईं। पूरी बारिश भर लोगों ने परेशानी झेली है। इधर मंडी परिसर में दो कवर्ड शेड भी लगाए जा रहे हैं। इससे किसानों को अनाज रखने में सहूलियत होगी। हथवांस तिराहे से गणेश मंदिर तक करीब 400 मीटर की रोड बेहद जर्जर है। इस हिस्से पर मंडी प्रशासन सीमेंटीकरण कराएगा। वर्तमान में रोड का अधिकांश हिस्सा डामर का है। लेकिन भारी यातायात के कारण रोड जल्दी खराब हो जाती है। हथवांस तिराहे से मंडी तक डेढ़ किलोमीटर लंबी सड़क है। सड़क पूरी खराब है लेकिन कुछ हिस्सा बेहद खराब हो चुका है। बड़े-बड़े गड्ढों में लोडेड ट्रक और ट्रैक्टर-ट्रॉलियां फंस जाती हैं। अनाज से लदे वाहनों को निकालना मुश्किल होता है। हालांकि अस्थाई रूप से यहां गड्ढों में मिट्टी का भराव कराया गया है। बारिश के दिनों में कीचड़ और गंदगी और आम दिनों में धूल के गुबार लोगों को परेशान कर रहे हैं।

'राकृवियो' से हिमाचल को मिले 72 करोड़ रुपये

शिमला, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना राज्य सरकारों को अपनी राज्य योजनाओं में कृषि में निवेश का हिस्सा बढ़ाने को प्रेरित करने के लिए बनाई गई थी। इसके अंतर्गत केंद्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश को वर्ष 2013-14 में कृषि क्षेत्र के विकास के लिए 72.27 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। कृषि व संबद्ध क्षेत्रों के विकास के लिए 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि क्षेत्र में चार प्रतिशत की विकास दर प्राप्त करने के लिए यह योजना लागू की गई। इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य को कृषि व संबद्ध क्षेत्रों में निवेश के लिए प्रोत्साहित करना, तथा कृषि कार्यक्रमों की योजना बनाने के अलावा इन्हें लागू करने की प्रक्रिया में राज्यों को छूट दी जाएगी आदि शामिल हैं।इस योजना की सहायता दो भागों में विभाजित की गई हैं।जिसमें 72.27 करोड़ रुपये में से 58.21 करोड़ रुपये एक भाग में और 14.06 करोड़ रुपये दुसरे भाग के लिए रखे गए हैं।पहले भाग में विभिन्न योजनाये, जैविक खेती, आदर्श कृषि ग्राम योजना, सब्जी उत्पादन, फसल विविधीकरण व सिंचाई के लिए राशी खर्च की जाएगी जबकि दुसरे भाग की राशी राज्य की वर्तमान योजनाओं को सशक्त करने व अन्य कृषि संबद्ध विभाग जैसे कि बागवानी, पशुपालन, मत्स्य, डेयरी विकास, कृषि शोध व शिक्षा आदि को सहायता पहुचाने के लिए दी जाएगी

फसल पर छाये 'लीफ कटर' से किसान परेशान

देहरादून उत्तराखंड में आई भयंकर प्राकृतिक आपदा से वहां का जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया हैं धीरे धीरे जनजीवन पूर्ववत होने के प्रयास जारी हैं ऐसे में 'लीफ कटर' कीट ने अरबी की फसल पर हमला बोल दिया है जिससे वहां के किसान परेशान हो गए हैं लगभग चालीस फीसदी फसल बर्बाद होने के कगार पर हैं।

कीट फसल के पत्तों को खाकर बर्बाद कर रहा है। जिससे पौधे में भोजन बनाने की प्रक्रिया धीरे-धीरे खत्म होकर पौधा सूख जाता है। इन दिनों यह प्रकोप साहिया और आसपास के क्षेत्रों में फैली अरबी की फसल पर छाया हुआ हैं किसान फसल की नुकसानी देख परेशान हैं पहले से ही आपदा से कई गुना फसल बर्बाद हो चुकी है, उसपर कीट ने हमला बोल दिया हैं।

सोयाबीन की फसल को बारिश ने कर दिया घायल

भोपाल खरीफ सीजन में सोयाबीन की फसल को बारिश कीमार ने कर दिया घायलं भारी बारिश के चलते अनुमान लगाया जारहा है की अबतक करीबन 7 फीसदी फसल बर्बाद हो चुकी हैं मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में लगातार हो रही बारिश से फसल का यह रूप सामने आया हैं रिपोर्ट्स के मुताबिक मध्य प्रदेश में होशंगाबाद, बेतुल और सागर जिलों और महाराष्ट्र में विदर्भ, अमरावती और अकोला में सोयाबीन की फसल को ज्यादा नुकसान पहुंचा है। यह खबर बाजार में फैलते ही सोयाबीन के दामों में उछाल आ गया है

प्याज भी अब लुटेरों के निशाने पर आया

जयपुर। राजस्थान में लुटेरों की सूची में अब जेवर और नगदी के साथ प्याज भी शामिल हो गया है। जयपुर दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर लुटेरे शाहपुरा के पास चालीस टन प्याज से भरे ट्रक को ड्राइवर और खलासी को बांधकर ले उड़े। पुलिस की सतर्कता से ट्रक को दो घंटे में ही बरामद कर लिया गया। ये ट्रक सीकर से प्याज भर कर मीरट जा रहा था। ट्रक ड्राइवर मिंटू और खलासी रिंकू ने बताया कि रविवार को सुबह 10 बजे जब वे ट्रक को मीरट ले जा रहे थे तभी लाल बत्ती लगी एक गाड़ी में लुटेरों ने हथियार की नोंक पर अपहरण कर लिया। हालांकि पुलिस ने दो घंटे बाद इन्हें पकड़ लिया। राज्य में प्याज की कीमत 60 से 75 रुपये प्रति किलो चल रही है और सरकार ने बढ़ती कीमतों के मद्देनजर 30 रुपये किलो प्याज बांटने का फैसला किया है।

कारोबार

जुलाई के चाय उत्पादन में 16% की जोरदार बढ़त

पश्चिम बंगाल व असम की बेहतर पैदावार के चलते कुल उत्पादन को बढ़ावा पिछले जुलाई माह में चाय का उत्पादन 16 फीसदी बढ़कर 1550.6 लाख किलो हो गया। पश्चिम बंगाल और असम में बेहतर उत्पादन होने की वजह से कुल पैदावार ज्यादा रही। पिछले साल जुलाई में १३३०.२ लाख किलो चाय का उत्पादन हुआ था। टी बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक असम में चाय का उत्पादन 20.20 फीसदी बढ़कर ९२९ लाख किलो हो गया। पिछले साल जुलाई में वहां 772.9 लाख किलो उत्पादन हुआ था। पश्चिम बंगाल में उत्पादन 26.89 फीसदी बढ़ा। वहां चाय का उत्पादन 328.7 लाख किलो से बढ़कर 417.1 लाख किलो हो गया। ये दोनों ही राज्य चाय के उत्पादन में सबसे बड़े योगदान देने वाले हैं। जुलाई में इन दोनों राज्यों का चाय के उत्पादन में योगदान करीब ८७ फीसदी रही। टी बोर्ड के अनुसार दक्षिण भारत में चाय का उत्पादन जुलाई के दौरान १७.८६ फीसदी गिरकर १६८.३ लाख किलो रह गया। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है। खपत के मामले में भारत सबसे ऊपर है। वर्ष 2012-13 के दौरान चाय का उत्पादन 3.62 फीसदी की बढ़त के साथ 11350 लाख किलो रहा। वर्ष 2012 में कुल उत्पादन 10950 लाख किलो चाय का उत्पादन हुआ था।

रघुराम ने सभाली कमान बाजार भी सभला

मुंबई। रिजर्व बैंक के नए गवर्नर रघुराम राजन की ओर से अर्थव्यवस्था और रुपये में सुधार के ताबड़तोड़ कदमों ने निवेशकों पर जादू कर दिया। इसका असर विदेशी मुद्रा और शेयर बाजार दोनों पर दिखा। इस दिन निवेशकों ने भारी लिवाली की। इससे बंबई शेयर बाजार उछल गया। आरबीआई की पहल से डॉलर के मुकाबले रुपये में मजबूती आई

हिंदकेम कारपोरेशन का प्रचार और उसका असर

हिंदकेम कारपोरेशन मुंबई की द्वारा पिछले दिनो प्रचार अभियान चलाया गया कंपनी के प्रतिनिधी किशोर गौतम ने कंपनी के उत्पाद जानकारी देते हूए बताया कारपोरेशन का उत्कृष्ट सोयाबिन की फसलो में लाभकारी होता है। कई उपयोग किया उपयोग करने सरदारजी का उपयोग करने हनुमान सारस्वत (दादा बिकानेर के रहने वाले है ने की फसल में इसका उपयोग उन्हे देखने को मिल रहे है। रहने वाले नरोतन तॅवर ने उपयोग किया और उन्हे भी देखने को मिले। झुनझुनू भी अनुभव की कहानी ऐसी एक साल से सरदारजी का उपयोग करते रहे है। वह इसके लाभ उठाते रहे है।

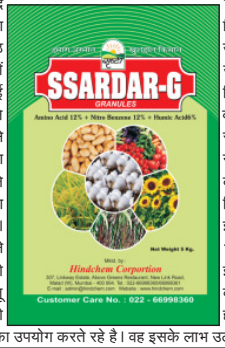

'सरदारजी' के बारे में कि,सरदारजी हिंदकेम उत्पाद है जो कि धान तथा उत्पादन बढाने में बहुत किसानो ने सरदारजी का वाले किसानो बताया कि उन्हें से लाभ मिला।

नपसारवाले) जो कि बताया,कि उन्होंने मुँगफली किया। और उसके परिणाम इसी तरह चुरू जिला के भी मुँगफली की फसल में इसके सुखद परिणाम के रहने वाले शशिराम की ही है। उन्होनें बताया वहा

सोनालिका ट्रॅक्टर बना किसानो का आकर्षण

गांधी नगर। चार दिन चलनेवाले किसानो के मेले में सोनालिका इंटरनॅशनल ट्रैक्टर लिमिटेड के ट्रैक्टर ने अपनी उपस्थिती दर्ज कराई। सोनालिका इंटरनॅशनल ट्रैक्टर लिमिटेड के जोनल हेड ने बताया 'हमे किसानो की तरफ से ट्रैक्टर के लिए उत्साह देखने को मिल रहा है। भविष्य में हमारी कंपनी किसानो को अपनी सेवाए प्रदान करती रहेगी।

आर्थिक विकास की राह पर लौटेगा भारत : चिदंबरम

नई दिल्ली: आर्थिक विकास दर में गिरावट स्वीकारते हुए सरकार ने आज कहा कि अर्थव्यवस्था दबाव के दौर से गुजर रही है लेकिन निराश नहीं होना चाहिए, भारत आर्थिक विकास की राह पर वापस लौटेगा।

वित्त मंत्री ने कहा, 'अर्थव्यवस्था दबाव की स्थिति से गुजर रही है, पहली तिमाही में वृद्धि निराशाजनक रही है हालांकि निराशा के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। भारत आर्थिक विकास की राह पर वापस लौटेगा।'

ग्वार में दोबारा सट्टेबाजी पर एफएमसी सख्त

ग्वार में दोबारा सट्टेबाजी पर वायदा बाजार आयोग एफएमसी ने सख्ती दिखाई है। एफएमसी ने एनसीडीईएक्स और एमसीएक्स से ग्वार के शीर्ष 25 क्लाइंट के सौदों की जानकारी मांगी है। साथ ही एफएमसी ने एनसीडीईएक्स और एमसीएक्स से ग्वार के शीर्ष २५ क्लाइंट के बैंक खातों की जानकारी मांगी है।

एफएमसी ने ग्वार में फंडिंग के सोर्स की जानकारी मांगी है। एफएमसी ने एनसीडीईएक्स और एमसीएक्स को जांच करके 15 दिन में रिपोर्ट देने को कहा है। दरअसल १ महीने में ग्वार में 100 फीसदी की तेजी के बाद एफएमसी ने एनसीडीईएक्स और एमसीएक्स को आदेश दिया है।

गेहूँ की मौसम आधारित वैज्ञानिक खेती

डा0 पद्माकर त्रिपाठी,
अरविन्द कुमार एवं डा0 ए0के0 सिंह
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, न0दे0 कृषि एवं प्रौ0 वि0वि0 फैजाबाद (उ0प्र0)

उत्तर प्रदेश मे लगभग 29 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल मे गेहूँ की खेती होती है। उत्पादन की दृश्टि से भारत में उत्तर प्रदेष का पहला स्थान है, परन्तु औसत उत्पादन मात्र 27.97 कु./हेक्टेयर है। देष की उत्तरोत्तर बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेष में गेहूँ के उत्पादन को बढ़ाने की बहुत सम्भावनाएँ है। यदि कृशक संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवारों का नियन्त्रण, उचित फसल सुरक्षा की ओर ध्यान दें तो गेहूँ का उत्पादन बढ़ा सकते हैं। वैसे तो गेहूँ की खेती विभिन्न प्रकार की भूमियों में की जा सकती है, लेकिन चिकनी दोमट, अच्छी संरचना, मध्यम जलधारण क्षमता वाली भूमि गेहूँ की खेती के लिए सर्वोतम मानी जाती है। स्थानीय परिस्थितियों जैसे जलवायु, सिंचाई के साधन तथा बुवाई की अनुकूलता के आधार पर गेहूँ की असिंचित दषा में यू0पी0.2338, पी.बी.175, के0 78, के0 9465 ;गोमतीद्ध, के0 8027 ;इन्द्राद्ध, सी. 306 ;सुजाताद्ध, एच.डी.आर.77, सिंचित दषा में समय से वुवाई करने हेतु यू.पी. 2382, यू.पी. 2003, डी.एम. 1734 ;राजलक्ष्मीद्ध, के0 9107 ;उजियारद्ध, एन.डब्ल्यू 1012, एच.पी 1761, एच.यू. डब्ल्यू.468, एच.डी.0733, पी.बी.डब्ल्यू 502, डी.बी.डब्ल्यू 17, पी.बी. डब्ल्यू 443 प्रजातियाँ संस्तुत की गयी हैं। सिंचित दषा में बिलम्व से वुवाई के लिए एच.डी.2285, एच.पी.1209, मालवीय 234, एच. पी. 1633 ;सोनालीद्ध, एच.पी. 1744, एन.डब्ल्यू.1014 ;नरेन्द्रद्ध, के. 8020. ;त्रिवेणीद्ध. एच.डी.2643 ;गंगाद्ध, यू.पी.2425, के.9162 गंगोत्री, पी.बी.डब्ल्यू.373, पी.बी.डब्ल्यू.509, राज.3765, पी.बी.डब्ल्यू.154 जबकि ऊसरीली भूमि हेतु के.आर.एल 1–4, राज. 3077, लोक 1, पी.बी.डब्ल्यू–65, के.आर.एल.19, के. 8434;प्रसाद) उपयुक्त प्रजातियां हैं।

गेहूँ की बुवाई अधिकतर धान के बाद की जाती है, अतः भारी भूमि को पहले मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई के बाद डिस्क हैरो से दो बार जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बनाकर बुवाई करना उचित है। धान की ठूंठ को जल्दी सड़ाने के उद्देश्य से 15–20 किग्रा0 यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से पहली जुताई में प्रयोग करें। ताकि गेहूँ की शुरूआती दौर में नत्रजन की कमी न हो।

गेहूँ की बुवाई निर्धारित समय पर पर्याप्त नमी की दशा में किया जाना चाहिए। उन्नतशील प्रजातियों को 4–5 सेंमी0 की गहराई पर तथा बिलम्बित दशा में 4 सेंमी0 की गहराई पर ही बुवाई करना चाहिए। दिसम्बर में बुवाई करने पर फूल आने के समय तापमान में बृद्धि के परिणामस्वरूप गेहूँ की पैदावार 3 से 4 कुन्तल जबकि जनवरी में बुवाई करने पर 4 से 5 कुन्तल प्रति सप्ताह की दर से कमी आती है। समय से बुवाई हेतु 100 किग्रा ध्हे0 तथा विलम्ब से बुवाई हेतु 120 किग्रा ध्हे0 बीज की आवश्यकता होती है।

गेहूँ की फसल से अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि खेत को बुवाई के 40–50 दिन के पहले खरपतवारों से मुक्त कर दिया जाय। चौड़ी पत्ती के खरपतवारों का रासायनिक नियंत्रण 2,4–डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत डबलू0 पी0 625 ग्राम का प्रयोग 800–100 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 30–40 दिन के अन्दर लैटफैन नाजिल से खड़ी फसल में छिड़काव कर देना चाहिए। संकरी पत्ती जैसे गेहूँसा व जंगली जई के रासायनिक नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरान 50ध्75 प्रतिशत की 2.00ध्1.25 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर उपर्युक्त विधि से बुवाई के 20–30 दिन के भीतर करनी चाहिए। जिन खेतों में चौड़ी व संकरी पत्ती वाले खरपतपार को नियंत्रित करना हो वहाँ 2–4, डी व आइसोप्रोट्यूरान को एक साथ मिलाकर प्रयोग करना चाहिए। गेहूँ की फसल में करनाल बन्ट रोग से ग्रसित दाने आंशिक रूप से काले चूर्ण मे बदल जाते है जिसे बीज शोधन कर निंयत्रित किया जा सकता है, खड़ी फसल मे रोग नियंत्रण हेतु 2 किग्रा. मैंकोजेब प्रति हेक्टेयर 1000 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करने से बालियों में दाने के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है। 2.5 ग्राम प्रति किग्रा. की दर से कार्बेन्डाजिम अथवा कार्बाक्सीन से बीजशोधन कर बुवाई करनी चाहिए। खड़ी फसल में झुलसा व गेरूई रोगों की रोकथाम जिनेब 75 प्रतिशत 2.5 किग्रा, मैकोजेब 2.00 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग कर बचाया जा सकता है। इस तरह से गेहूँ की मौसम आधारित वैज्ञानिक खेती करके किसान भाई अधिकतम् उत्पादन प्राप्त कर सरके हैं।

मानसून के बिलम्ब की अवस्था में धान के अधिक उत्पादन की चमत्कारी पद्धति एस. आर. आइ. (स्री)

डा0 पद्माकर त्रिपाठी, डा0 सीताराम मिश्र, डा0 अनिल कुमार सिंह एवं अरविन्द कुमार
कृशि मौसम विज्ञान विभाग, न0दे0कृ0 वि0वि0 कुमारगंज, फैजाबाद (उ0प्र0)

चावल का खाद्यान्न मे महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेष मे क्षेत्रफल आच्छादन एवं चावल उत्पादन की दृश्टि से गेहॅू के बाद धान दूसरे नम्बर पर आता है। देष के कुल चावल उत्पादन का लगभग 12 प्रतिषत उत्पादन धान के अन्तर्गत कुल आच्छादित क्षेत्रफल के 13 प्रतिषत भाग से प्रदेष द्वारा किया जा रहा है, परन्तु पिछले एक दषक के दौरान चावल के उत्पादन एवं उत्पादकता में देष एवं विषेश रूप से प्रदेष स्तर पर ठहराव निरन्तर बढ़ती जनसंख्या के दृश्टिगत चिन्तनीय विशय हो गया है। अत्यधिक निवेष आधारित तकनीकी का अंगीकरण आर्थिक दृश्टि से अलाभकारी एवं पर्यावरण विनाषक साबित हो सकता है। संकर प्रजातियों के प्रसार एवं विभिन्न कृशि निवेषों के प्रयोग को बढ़ाने से धान की उत्पादकता कुछ हद तक बढ़ाना संभव है, परन्तु स्थायी समाधान के रूप मे ऐसे उपाय की आवष्यकता है, जो कम लागत से अधिक पैदावार देने के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधन संरक्षक तथा पर्यावरण हितैशी भी हो।

क्षेत्रफल एवं धान उत्पादन की .शिट से बंगाल के बाद उत्तर प्रदेष का दूसरा स्थान है, परन्तु धान उत्पादन में प्रदेष का पंजाब, तमिलनाडु,, आन्ध्र प्रदेष तथा पष्चिम बंगाल के बाद पांचवॉ स्थान आता है (सारिणी)।

सारिणीः क्षेत्रफल, धान एवं उत्पादन एवं उत्पादकता (5 अग्रणी राज्यों में)

राज्य	क्षेत्रफल	उत्पादन (लाख टन)	उत्पादकता (कु0/हे0)
पंजाब	24.87	132.24	53.2
तमिलनाडु	20.60	98.96	47.9
प बंगाल	60.69	228.85	37.7
आन्ध्र प्रदेश	38.25	170.85	44.7
य.पी.	59.30	192.84	31.8
भारत	437.07	1366.29	30.5

अतः मानसून की बिलम्बता की स्थिति में धान के अधिक उत्पादन लेने के लिए एस.आर.आई. वैज्ञानिक पद्धति अत्यंत उपयोगी है क्योंकि उक्त सभी खूबियॉ सिस्टम आफ राईस इन्टेन्सीफिकेषन (एस.आर.आई. अर्थात् स्री पद्धति) के अन्तर्गत मौजूद है। सामान्य धान उत्पादन तकनीकी की तुलना में स्री पद्धति सस्ती एवं अधिक पैदावार देने वाली है।

एस.आर.आई पद्धति क्या है?

सिस्टम आफ राईस इन्टेन्सीफिकेषन जो संक्षेप मे एस.आर.आई. अर्थात स्री पद्धति के नाम से प्रचलित है धान की ऐसी पद्धति है जिसमे मृदा उत्पादकता, जल उपयोग दक्षता, श्रम षक्ति पूंजी की दक्षता एक साथ बढ़ाने की क्षमता है। स्री पद्धति से उगाई गई फसल परम्परागत विधि से उगाई गई फसल की अपेक्षा औसतन 10–30ः अतिरिक्त पैदावार विभिन्न स्थानों पर प्राप्त की गई है। स्री पद्धति के अन्तर्गत न केवल अतिरिक्त उपज प्राप्त होगी बल्कि 50ः तक सिंचाई जल की बचत, 90ः तक बीज बचत, मृदा स्वास्थ्य मे सुधार, 30–40ः रासायनिक उर्वरक वचत, कम निवेषों के फलस्वरूप उत्पादन लागत में कमी को दावा किया जाता है उक्त के दृश्टिगत स्री पद्धति को एक स्थाई उत्पादन पद्धति न कि सिर्फ अधिक उपज प्राप्त करने की विधि।

स्री पद्धति से धान की खेती

नर्सरी तैयार करना

स्री पद्धति के अन्तर्गत कम अवधि (8–12 दिन) की पौध रोपी जाती है। नर्सरी को यथासम्भव मुख्य खेत के समीप ही रखा जाये। जिससे नर्सरी से पौध निकालने के बाद षीघ्रातिषीघ्र रोपाई हो जाय। नर्सरी हेतु 576 इंच उठी तथा 4 फुट चौड़ी आवष्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियॉ बनायें उठी हुई क्यारियों से जड़ों के बगैर नुकसान पहुंचाये पौधों को आसानी से निकाला जा सकेगा। एक हेक्टेयर खेत की रोपाई के लिये 1000 वर्गफुट की नर्सरी पर्याप्त होगी। उठी हुई क्यारियॉ निम्नानुसार तैयार करे।

पहली पर्त : 1 इंच मोटी सड़ी गोबर खाद
दूसरी पर्त : 1.5 इंच मोटी खेत की भुरभुरी मिट्टी
तीसरी पर्त : 1 इंच मोटी सड़ी गोबर की खाद
चौथी पर्त : 2.5 इंच मोटी खेत की भुरभुरी मिट्टी

उपरोक्त सभी पर्तो को ठीक से मिला कर भुरभुरा बना ले। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल की रोपाई के लिये नर्सरी तैयार करने के लिए 6 किलो बीज की आवष्यकता होगी। तैयार की गई क्यारियों मे बीज को एक समान रूप से बिखेर कर सड़ी गोबर की खाद या खेत की मिट्टी को भुरभुरा करके बीज को तुरन्त ढ़क दें। क्यारियों मे पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिये फव्वारा विधि से सिंचाई करना श्रेयस्कर होगा। सिंचाई के मध्य बनाई नालियों मे पानी चलाकर भी की जा सकती है।

खेत की तैयारी

सामान्य धान की फसल हेतु तैयार किये जाने वाले खेत की भॉति ही स्री पद्धति के लिये तैयार किया जाता है। फसल अवधि मे विषेश रूप से प्रारम्भिक अवस्था में जल निकासी हेतु उचित प्रबन्ध किया जाना आवष्यक है।

रोपाई

स्री पद्धति के अन्तर्गत मात्र 8–12 दिन पुरानी पौध रोपाई हेतु प्रयोग की जाती है। अतः पौध को खुरपी की सहायता से इस प्रकार निकालें कि पौध में बीज चोल एवं जड़ो मे मिट्टी लगी रहे। यदि मैट विधि सें डाली गई है तो मैट को सीधे उठाकर रोपाई वाले खेत के पास ले जा सकते है। 8–12 अवधि की 2–3 पर्णीय पौध की 25 सेमी. की दूरी पर 2–3 सेमी. की गहराई पर अंगूठे एवं अनामिका अंगुली की सहायता से एक–एक पौध बीज चोल एवं मिट्टी सहित प्रति हिल बगैर पानी भरे खेत में लगाये। पौध की रोपाई जिस बिन्दु पर ऊर्द्धाकार एवं समानान्तर लाईन एक दूसरे को काटे पर करें। पौध की जड़ो का सूखने से बचाने के लिए पौधषाला से पौध निकालने के बाद आधा घण्टे के अन्दर लगाने का प्रयास किया जाना चाहिए एवं षेश प्रक्रिया सामान्य धान की भॉति किया जाना चाहिए।

(प्रो0 पद्माकर त्रिपाठी)
विभागाध्यक्ष, कृशि मौसम विज्ञान विभाग

मूँगफली में एफ्लाविष/ एफ्लाटोक्सिन के जोखिम को कम करने के उपाय

के. एस.जादौन,पि. पि. थिरुमलाईसामी, एवं राम दत्ता
मूँगफलीअनुसंधान निदेशालय, ईवनगर रोड, जूनागढ़ - 362001

मूँगफली के उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करणएवं भंडारण के समय एफ्लाटोक्सिन का संदूषण एक प्रमुख समस्या है,जो कि किसान, प्रसंस्करणकर्ताओं, तथा निर्यातकों के लिए एक चुनौती बना हुआ है। वर्षा पर आधारित क्षेत्रो में उगाई जाने वाले मूँगफली में एफ्लाविष संक्रमण एक गंभीर तथा व्यापक समस्या है। यह संक्रमण उत्पादकता को तो प्रभावित नहीं करता है लेकिन मूँगफली को उपयोग के लिए अयोग्य बना देता है, क्योंकि एफ्लाविष एक प्रकार का जहर है जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। एस्परजिलस की जहरीली प्रजातियां मूँगफली तथा अन्य कई फसलों एवं उनके उप्ताद को संक्रमित करने कि क्षमता रखती हैं। फसलों एवं उनके उत्पादों में संदूषण, एफ्लाटोक्सिन उत्पन्न करने वाली कवक के द्वारा फसलों के विकास अथवा उनके भण्डारण के समय संक्रमित करने से फैलता हैं

एफ्लाटोक्सिन एक शक्तिशाली विषाक्त, कैंसरजनक,उत्परिवर्तजनी, रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करने वाला कारक है। यह एस्परजिलस फ्लेवस, एस्परजिलस पैरासितिकस एवं एस्परजिलस नोमियस के द्वितीयक चयापचयी क्रियाओं द्वारा उत्पादित होता है।इस एफ्लाटोक्सिन समस्या को सर्वप्रथम 1960 में पहचाना गया था, जब इसके गंभीर प्रकोप को /टर्की एक्स रोगक का नाम ब्रिटेन में दिया गया था । जिसमे एक लाख से भी अधिक टर्की प्रजाति की मुर्गियों की मृत्यु हो गई थीं । इस रोग का कारण उनका भोजन, विषाक्त मूँगफली पाइ गई जो की एस्परजिलस फ्लेवस नाम की फंफ़ूद से ग्रसित था एवं तभी से इस विष का नाम एफ्लाटोक्सिन रखा गया। सभी प्रमुख 18 प्रकार के एफ्लाटोक्सिन में मुख्य रूप से पाए जाने वाले सदस्य बी1, बी2, जी1 एवं जी2 है, जिनमें बी१ एवं बी२ एस्परजिलस फ्लेवस से तथा जी1 एवं जी 2 एस्परजिलस पैरासितिकस से बनते हैं इनमें भी सबसे विषाक्त बी१ हैं विष उत्पादक कवक एस्पर्जिलस फ्लेवस तथा ए. पेरासिटिकस मूँगफली की कटाई से पहले खेत में, कटाई के बाद सुखाते समय, भण्डारण के समय/भण्डारण में तथा ढुलाई के समय भी,संक्रमण कर सकते हैं। अर्ध-शुष्क उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रो में कटाई से पहले संक्रमण के लिए तथा आर्द्र क्षेत्रो में कटाई उपरान्त संक्रमण के लिए ज्यादा उचित अनुकूलता होती है। इस कवक के विकास के लिए 36-38सेंटीग्रेड तापमान तथा 85 प्रतिशत से ज्यादा आर्द्रता उपयुक्त होती है।

कई देशों ने एफ्लाटोक्सिन के मनुष्य के स्वास्थ्यपर दुष्प्रभाव को देखते हुए इसकी अधिकतम सीमा खाद्य एवं खाद्य पदार्थो में निश्चित कर दी हैं यूरोपीय संघ के कुछ देशों, जैसे फ्रांस, डेनमार्क, इटली ने एफ्लाटोक्सिन संदूषण कि मात्रा क्रमशः 1, 10 एवं 50 पीपीबी (पीपीबी/ एक अरबवाँ भाग) रखी है, अपितु ऑस्ट्रेलिया में इसकी सीमा 16 पीपीबी, कनाडा में 15 पीपीबीएवं संयुक्त राज्य अमेरिका में 20 पीपीबी तक हैं अभी हाल ही में यूरोपीय संघ ने नया परिवर्तन करते हुए एफ्लाटोक्सिन बी१ की अधिकतम सीमा संघीय क्षेत्रो में 2 पीपीबी कर दी हैं संयुक्त राज्य अमेरिका के खाद्य एवं दवा प्रशासन ने मूंगफली एवं इसके उत्पादों में अधिकतम 20 पीपीबी तक एफ्लाटोक्सिन कि मात्रा को मनुष्यों के उपभोग के लिए स्वीकृति की है, वहीं यूरोपीय संघ ने मूंगफली में कुल एफ्लाटोक्सिन एवं बी१ की अधिकतम मात्रा क्रमशः 3 पीपीबी एवं 2 पीपीबी को स्वीकृति दी हैं इसी वजह से वर्तमान में, मूँगफली में एफ्लाटोक्सिन संदूषण एवं इसके संसाधित उत्पाद के लिए यह उत्पादकों, प्रसंस्?कर्ताओएवंनिर्यातकों के लिए यह प्रमुख चुनौती है।

मूँगफली में एफ्लाटोक्सिन संदूषण विभिन्न चरणों में निहित है। मूँगफली में इस फंफ़ूद एवं इसके द्वारा उत्पादित एफ्लाटोक्सिन संदूषण को सीमित करने के लिए जो रणनीतियाँ अपनायी जाती है वो निम्नलिखित चरणोंको ध्यान में रखते हुए बने गयी हैं:-

अ.कटाईपूर्व प्रबंधन
ब.कटाईतथा कटाईकेबादप्रबंधन
स.निर्विषीकरण

इसलेखमेंहममूँगफली में एफ्लाटोक्सिन संदूषण को सीमित करने के उपायों तथा एफ्लाटोक्सिन संदूषण प्रबंध के लिए अपनाए जानेवाले तरीको के बारे में जानकारी लेंगे जो की निम्नलिखित है:-

कटाईपूर्वप्रबंधन

विष उत्पादन को रोकने के लिए कवक के विकास को रोकना ही सबसे अच्छा उपाय हैं निम्नलिखित कारणों में दर्शाया गया है कि मूँगफली की कटाई से पहले किस प्रकार एफ्लाटोक्सिन संदूषणहोताहै।

1 मृदा मेंए. फ्लेवस की संख्या बहुतायत मेंपायीजातीहै,जोकिएकखेतसेदूसरेखेतमेंमृदाकेप्रकार एव फसलचक्र के अनुसार भिन्न होती हैं
2फलियोंकेविकासकेसमयउनमे दरारेपड़जाना
3अन्त:सश्य क्रियाओं केदौरानयंत्रोसेफलियोंकोचोटपहुँचना
4कीटों(दीमक, फलीछेदक) एवंपरजिवीयो (तारकीड़ा)काआक्रमणजिससेकीफलियोंकोनुकसानपहुंचताहै
5फलियों की परिपक्व अवस्था में पोधो का रोगों (तने,जड़, एवंफली गलन) से ग्रसित होकर मर जाना भी फलियों को एफ्लेवसके आक्रमणके लिए दुर्बल करता है।
६मृदा सूत्रकृमि के द्वारा फलियों को नुकसान

कटाईकेपूर्वएस्परजिलसफ्लेवसकासंक्रमणएवंएफ्लाटोक्सिन संदूषणमूँगफलीमेंफ़ैलनेकामुख्यकारणवातावरणमेंउच्चतापमानका (३०-400सेंटीग्रेड) मृदा में कममात्रा मेनमीहोनाएवंफसलकालम्बेसमय (२० दिनसेअधिक) तकसूखेमेंरहनाहै।कटाईपूर्वएफ्लाटोक्सिन संदूषण की रोकथामही शायद एक सबसेअच्छा एवं सबसे व्यापक रूप से अपनाई गयी रणनीति है, क्यो किए.फ्लेवस सभी फसलों को,कटाई से पूर्व ही प्रभावित करता है। मूँगफली कीफसललेनेवालोकेलिएमूँगफलीमेंएफ्लाटोक्सिन कीमात्राकोकमकरनेकेलिएरणनितिइसप्रकारहै :

1. स्वच्छखेतीकोअपनाना, पिछली फसलके अवशेषों एवं खरपतवार को हटाना चाहिए
2.गहरीजुताई(8-10 इंच)करनीचाहिएजिससेमृदाका सौरीकरण(२-३ सप्ताहकेलिए)होसके
3.बुवाईकेसमय 500 किलोग्राम/हेक्टरकेहिसाबसेकुंडमेंनीमया/तथा अरंडीकी खली काउपयोगकरनाचाहिए।नीम/अरंडीके साथ 2.5 किलोग्रामट्राइकोडर्माअच्छीतरहसेमिलानाचाहिए, यदि मिश्रण ज्यादा सूखा होतो थोडा पानी छिड़ककर ट्राइ कोडर्मा पाउडर मिलाना चाहिए।इस मिश्रण को मृदा में उपयोग करने से पहले एक सप्ताह तक छाया में रखना चाहिए।
4.यदि उपलब्ध होतोअच्छीतरहसेसड़े हुए गोबर की खाद/कम्पोस्ट को 5-10 टन/हेक्टेयर कि दर सेउपयोगकरनाचाहिए।
5.बुआई की द्विपंक्तिविधि अपनाने से पंक्तियों के बीच जल संचयनदियाजासकताहै।
6.फसलकीपरिपक्वताकेसमयसूखोसेबचानेकेलिएलघुएवं मध्यमअवधिवालीकिस्मोकाचयनकरना।फसल के अंत में सूखे से बचने के लिए, बुवाई एक पखवाडा पहले कर देनी चाहिए एवं बुवाई से पहले एक सिंचाईकरनीचाहिए।
७.केवलस्वस्थ बीजकोहीबोनाचाहिएतथाइनकोकार्बेन्डाजिमसे२ ग्राम/किलोग्रामबीजकेहिसाबसेबुवाईसे एकसप्ताहपूर्वउपचारित करनाचाहिएतथा इन्ही बीजो को दोबारा बाजार में उपलब्ध ट्राइकोडर्माहरजियानमयाट्राइकोडर्माविरिडा`के पाउडरसे 10 ग्राम/किलोग्रामबीजकेहिसाबसेबुवाईकेठीक पहलेउपचारितकरनाचाहिए।
8.जिप्समकाउपयोग 400-500 किलोग्राम/हेक्टेयर फूल आते समय करना चाहिए।
9.फसल परिपक्वता के समय पूरक सिंचाई देकर सूखे से बचाना चाहिए।
10.फसल कीकटाई पूरी तरह पकने(खोलकीअंदरूनीसतहकालीहोजायेतब) के बाद ही करनी चाहिएं.

भूरी चित्ती रोग (Brown Spot)/पत्र लांछन

अतुल कुमार, सोनी कुमारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, पूसा (बिहार)

यह रोग देश के लगभग सभी हिस्सों मे फैली हुई है, खासकर पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु इत्यादि। भारत मे इस रोग पर पहली बार रिर्पोट चेन्नई के सुन्दरारमण (1919) द्वारा बनाई गई थी। उत्तर बिहार का यह प्रमुख रोग है। यह एक बीजजनित रोग है। यह रोग हेल्मिन्थो स्पोरियम औराइजी द्वारा होता है। इस रोग मे धान की फसल को बिचड़ा से लेकर दानों तक को नुकसान पहुॅचाता है। इस रोग के कारण पत्तियों पर गोलाकार भूरे रंग के धब्बें बन जाते है। यह रोग फफूॅद जनित है। पौधों की बढ़वार कम होती है, दाने भी प्रभावित हो जाते है, जिससे उनकी अंकुरण क्षमता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। पत्तियों पर तिल के आकार के भूरे रंग के काले धब्बें बन जाते है। ये धब्बें आकार एवं माप मे बहुत छोटी बिंदी से लेकर गोल आकार का होता है। धब्बों के चारो ओर हल्की पीली आभा बनती है। पत्तियों पर ये पूरी तरह से बिखरे होते है। धब्बों के बीच का हिस्सा उजला या बैंगनी रंग की होती है। बड़े धब्बों के किनारे गहरे भूरे रंग के होते है, बीच का भाग पीलापन लिए, गेंदा सफेद या घूसर रंग का हो जाता है। उग्रावस्था मे पौधों के नीचे से ऊपर पत्तियों के अधिकांश भाग धब्बों से भर जाते है। ये धब्बें आपस मे मिलकर बड़े हो जाते है, और पत्तियों को सुखा देते है। आवरण पर काले धब्बे बनते है। इस रोग का प्रकोप उपराऊ धान मे कम उर्वरता वाले क्षेत्रों मे मई–सितम्बर माह के बीच अधिक दिखाई देते है। यह रोग ज्यादातर उन क्षेत्रों मे देखने को मिलता है, जहाँ किसान भाई खेतों मे उचित प्रबंधन की व्यवस्था नही कर पाते है। इसमे जड़ के अलावे पौधे के सभी रोगी हो सकते है। इस रोग मे दानों के छिलको पर भूरे से काले धब्बें बनते है, जिससे चावल बदरंग हो जाता है।

रोग नियंत्रणः–

.बीजों को थीरम एवं कार्बेन्डाजिम (2:1) की उग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए।
.रोग सहनशी किस्मों जैसे– बाला, कृष्णा, कुसुमा, कावेरी, रासी, जगन्नाथ और आई आर 36, 42, आदि का व्यवहार करें।
.रोग दिखाई देने पर मैन्कोजैव के 0.25 प्रतिशत घोल के 2–3 छिड़काव 10–12 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए।
.अनुशंसित नेत्रजन की मात्रा ही खेत मे डाले।
.बीज को बेविस्टीन 2 ग्राम या कैप्टान 2.5 ग्राम नामक दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुआई से पहले उपचारित कर लेना चाहिए।
.खड़ी फसल में इण्डोफिल एम–45 की 2.5 किलोग्राम मात्रा को 1000 लीटर पानी मे घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव 15 दिनों के अन्तर पर करें।
.रोगी पौधों के अवशेषों और घासों को नष्ट कर दें।
.मिट्टी मे पोटाश, फास्फोरस, मैगनीज और चूने का व्यवहार उचित मात्रा मे करना चाहिए।

झोंका (ब्लास्ट) रोग (ठसेंज)/प्रध्वंस

यह रोग पिरीकुलेरिया ओराइजी नामक कवक द्वारा फैलता है। धान का यह ब्लास्ट रोग अत्यंत विनाशकारी होता है। पत्तियों और उनके निचले भागों पर छोटे और नीले धब्बें बनते है, और बाद मे आकार मे बढ़कर ये धब्बें नाव की तरह हो जाते है। बिहार में मुख्यतः इस रोग का प्रकोप सुगंधित धान मे पाया जाता है। इस रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों पर दिखाई देते है, लेकिन इसका आक्रमण पर्णच्छद, पश्पक्रम, गांठो तथा दानों के छिलको पर भी होता है। मुख्यतः पत्ती ब्लास्ट, पर्वसंधि ब्लास्ट और गर्दन ब्लास्ट के रूप मे इस रोग को देखते है। यह फफूॅदजनित है। फफूंद पौधे के पत्तियों, गांठो एवं बालियों के आधार को भी प्रभावित करता है। धब्बों के बीच का भाग राख के रंग का तथा किनारें कत्थई रंग के घेरे की तरह होते है, जो बढ़कर कई सेन्टीमीटर बड़ा हो जाता है। जब यह रोग उग्र होता है, तो बाली के आधार भी रोगग्रस्त हो जाते है, और बाली कमजोर होकर वही से टूट कर गिर जाती है। भूरे धब्बों के मध्य भाग मे सफेद रंग होता है। इस अवस्था मे अधिक क्षति होती है। गांठ का भूरा–काला होना एवं सड़न की स्थिति मे टूटना, दानों का खखड़ी होना एवं बाली के आधार पर फफूंद का सफेद जाल होना 'नेक राट' कहलाता है। क्षत स्थल के बीच का भाग घूसर रंग का हो जाता है। अनुकूल वातावरण मे कई क्षतस्थल बढ़कर आपस मे मिल जाते है, जिसके फलस्वरूप पत्तियां झूलसकर सूख जाती है। गॉठो पर भी भूरे रंग के धब्बें बनते है, जिससे समुचित पौधे को नुकसान पहुॅचता है। तनो की गांठों पूर्णतया या उसका कुछ भाग काला पड़ जाता है, कल्लों की गांठो पर कवक के आक्रमण से भूरे धब्बें बनते है, जिससे गांठ के चारो ओर से घेर लेने से पौधे टूट जाते है। बालियों के निचले डंठल पर घूसर बादामी रंग के क्षतस्थल बनते है, जिसे 'ग्रीवा विगलन' कहते है। रोगी बालियों मे दाने नही बनते है, और बालियॉ सड़े भाग से टूट कर गिर जाती है। लीफ ब्लास्ट में पत्तियों पर राख के समान स्लेटी रंग का केन्द्रीय भाग एवं भूरे रंग के किनारों वाले बड़े शंक्वाकार अथवा ऑखों की आकृति वाले धब्बें बनतें है।

कृषि का सहायक लाभदायक व्यवसाय बकरी पालन

कृषि को लाभदायक बनाने के लिए कई सहायक व्यवसाय जैसे पशुपालन, (गाय भैंस आदि), बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, कुक्कुट पालन आदि अपनाए जा सकते हैं। इनमें से बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम लागत, कम पूँजी व अपेक्षाकृत कम जगह में किया जा सकता है। यह किसान को आर्थिक रूप से सुदृढ व शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बकरी एक छोटा जानवर है, जिसे सरलतापूर्वक पाला जा सकता है। इन्हें दूध व मांस के लिए भूमिहीन तथा सीमांत कृषकों द्वारा पाला जाता है। बकरी की मेंगनी व मूत्र जो बिछावन पर एकत्र होते हैं, एक अच्छे खाद की तरह उपयोग में आते हैं। बकरी पालन पर केंद्र व राज्य शासन द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से 25 से 33.3 प्रश तक अनुदान दिया जाता है। सही प्रशिक्षण, दिशा-निर्देश द्वारा इसे लाभदायक व्यवसाय बनाया जा सकता है।

इस व्यवसाय को लाभदायक बनाने के लिए सहकारी संस्था के माध्यम से उसके सदस्यों के रूप में या अपनी स्थिति के अनुसार अकेले इसे अपनाया जा सकता है। इसके कुछ मानक मापदंड हो सकते हैं।

- आर्थिक रूप से स्वावलंबी इकाई के लिए 95 बकरी और 5 बकरे होना चाहिए।

-औसत रूप से एक बकरी के लिए एक वर्गमीटर ढके हुए (कवर्ड) क्षेत्र की जरूरत होती है।

- इसी प्रकार प्रति बकरी 1.5 वर्गमीटर खुले क्षेत्र की आवश्यकता होती है।

-इस व्यवसाय में मूल्यह्रास (डिप्रिसिएशन) प्रति पशु 15 प्रश, इमारत (बिल्डिंग) पर 10 प्रश और उपकरणों पर 15 प्रश प्रतिवर्ष के हिसाब से निकाला जाता है।

-कमी के समय (लीन पीरियड) प्रति पशु दो किलोग्राम स्थानीय रूप से उपलब्ध दलहनी भूसा प्रतिदिन खिलाया जाना चाहिए। लगभग दो किलोग्राम दाने वाला चारा प्रति पशु दिया जाना चाहिए।

-पशु शावक (बकरी के बच्चे) को चार व पाँच माह की आयु 200 ग्राम पौष्टिक आहार (कांसंट्रेटस) प्रति बच्चा और 300 ग्राम प्रति पशु गर्भ के समय से दो माह तक देना चाहिए। इसी प्रकार 500 ग्राम पौष्टिक आहार प्रति बकरा, जनन ऋतु (ब्रीडिंग सीजन) में दिया जाना चाहिए।

-बकरी के बच्चे के लिए माँ के एक थन का दूध छोडकर शेष तीनों थनों का दूध निकाला लेना चाहिए। शेष तीन थनों का दूध बेचने के लिए निकाल लिया जाता है।

बकरी का मांस कम चिकनाई (फेट) वाला होता है। इससे साफ किया हुआ (ड्रेस्ट मीट) मांस लगभग 44 से 49 प्रश तक मिल जाता है। बकरी का दूध इन दिनों १२ से १५ रुपए प्रति लीटर बिक जाता है। लगभग 100 बकरियों के एक झुंड की देखरेख व साज-संभाल के लिए दो से तीन व्यक्ति पर्याप्त होते हैं। सामान्यत: बकरी के बच्चों की मृत्यु दर (मार्टेलिटी रेट) 10 प्रश होती है।

प्रजनन काल

बकरी एक साल की कम से कम 30 किलोग्राम वजन की हो जाने पर इनका प्रजनन कराया जा सकता है। यह कार्य दो साल में तीन बार कर सकते हैं। एक साल से कम आयु के बकरे को प्रजनन कार्य में नहीं लगाना जाना चाहिए। एक अध्ययन में पाया गया कि इसके लिए 2 से 3 वर्ष की आयु सबसे उपयुक्त होती है।

प्रति प्रजनन मौसम में एक नर बकरे का उपयोग २०-२५ प्रजनन के लिए किया जाता है। यद्यपि आदर्श स्थितियों में एक बकरे का उपयोग साल में 50 से 70 बार तक संभव है। प्रजनन के लिए साल में दो मौसम मार्च से मई और सितंबर से नवंबर उपयुक्त बताए गए हैं। बकरियों में सेस्ट्रस सायकल प्रति 15 से 18 दिन का होता है। और 39 से 48 घंटे तक रहता है। बच्चे होने का अंतराल अलग प्रजातियों व किस्मों में आठ से नौ माह रहता है।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

हाथी

हाथी ज़मीन में रहने वाला एक विशाल प्राणी है। दरअसल हाथी ज़मीन में रहने वाला सबसे विशाल स्तनपायी है। एशियाई सभ्यताओं में हाथी बुद्धिमत्ता का प्रतीक माना जाता है, और अपनी स्मरण शक्ति तथा बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ उनकी बुद्धिमानी डॉल्फ़िन तथा वनमानुषों के बराबर मानी जाती है।पर्यवेक्षण से पता चला है कि हाथी का कोई प्राकृतिक परभक्षी नहीं होता है,हालांकि सिंह का समूह शावक या कमज़ोर जीव का शिकार करते देखा गया है। अब यह मनुष्य की दखल तथा अवैध शिकार के कारण संकट में है।

एशियाई हाथी

एशियाई हाथी, एलिफ़स मैक्सिमस, अफ़्रीकी हाथी से छोटा होता है। इसके कान छोटे होते हैं और अधिकांशत रूप से केवल नर में हाथीदांत पाये जाते हैं।

दुनिया भर में एशियाई हाथी की - जिनहें भारतीय हाथी भी कहा जाता है - आबादी ६०००० आंकी गई है जो अफ़्रीकी हाथी का दसवां भाग है। अधिक सटीक यह अनुमान लगाया गया है कि एशिया में जंगली हाथी क़रीब ३८००० से ५३००० हैं तथा पालतू हाथी १४५०० से लेकर १५३०० हैं और तक़रीबन १००० हाथी दुनिया भर के चिड़ियाघरों में हैं।एशियाई हाथी की आबादी का पतन अफ़्रीकी हाथी की तुलना में धीरे हुआ है और इसके प्रमुख कारण हैं अवैध शिकार तथा मनुष्यों द्वारा उनके क्षेत्रों को हड़प जाना।

जयपुर, भारत में एक सुसज्जित हाथी

एशियाई हाथी की कई उपजातियाँ मौफ़ीमाट्रिक तथा मौलिक्यूलर डाटा

प्रणालियों द्वारा पहचानी गई हैं। एलिफ़स मैक्सिमस मैक्सिमस (श्री लंकाई हाथी) केवल श्री लंका के द्वीप में पाया जाता है। वह एशियाई हाथियों में सबसे बड़ा है। एक अनुमान के मुताबिक इनकी जंगलों

में संख्या 3000 से 4500 तक आंकी गई है हालांकि हाल में कोई सर्वेक्षण नहीं हुआ है। बड़े नर हाथी 5400 कि. के लगभग वज़नी होते हैं तथा कंधे तक 3.4 मी. तक ऊँचे होते हैं। नरों के माथे पर बहुत बड़े उभार होते हैं और दोनों लिंगों में अन्य एशियाई हाथियों की तुलना में रंजकता (pigmentation) क्षीण होती है। विशेषतय: इनके सूंड, कान, मुँह तथा पेट में हल्के गुलाबी रंग के चित्ते पड़े होते हैं। पित्रावाला, श्री लंका में हाथियों का अनाथाश्रम है जो इनको विलुप्त होने से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एलिफ़स मैक्सिमस इन्डिकस (भारतीय हाथी) एशियाई हाथी की आबादी का बड़ा हिस्सा बनाता है। क़रीब 36000 की आबादी वाले ये हाथी हल्के स्लेटी रंग के होते हैं, तथा इनके केवल कानों और सूंड में रंजकता क्षीण होती है। बड़े नर अमूमन 5000 कि. वज़नी होते हैं लेकिन श्री लंकाई हाथी जितने ऊँचे होते हैं। मुख्य भू-भागीय हाथी भारत से लेकर इंडोनेशिया तक11 एशियाई देशों में पाया जाता है। इनको जंगली इलाके परिवर्ती अंचल, जो कि जंगलों और घास के मैदानों के बीच होते हैं, पसन्द हैं क्योंकि वहाँ इनको भोजन में अधिक विविधता मिल जाती है।

एलिफ़स मैक्सिमस सुमात्रेनस, या सुमात्रा का हाथी केवल सुमात्रा ही में पाया जाता है। यह भारतीय हाथी से छोटा होता है। इनकी संख्या 2100 से 3000 के बीच आंकी गई है। यह भारतीय हाथी से भी हल्के रंग का होता है और इसकी रंजकता अन्य एशियाई हाथियों की तुलना में कम क्षीण होती है तथा सिर्फ़ कानों पर गुलाबी धब्बे होते हैं। वयस्क सुमात्राई हाथी अमूमन कंधे तक केवल 1.7 से 2.6 मी. ऊँचा होता है तथा वज़न में 3000 कि. से कम होता है। यह अपने एशियाई तथा अफ़्रीकी रिश्तेदारों से काफ़ी छोटा होता है और केवल सुमात्रा द्वीप के उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहाँ या तो जंगल हों या पेड़ों की झुरमुट हो।

जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान में नर हाथी

सन् २००३ ई. में बोर्नियो द्वीप में एक अन्य उपजाति पहचानी गई है। इसको बोर्नियो पिग्मी हाथी के नाम से नवाज़ा गया है, और अन्य एशियाई हाथियों की तुलना में यह ज़्यादा छोटा और कम आक्रामक होता है। इसके अपेक्षाकृत बड़े कान और पूँछ होते हैं और इसके हाथीदांत भी अधिक सीधे होते हैं।

सूंड हाथी की नाक और उसके ऊपरी होंठ की संधि है और लंबी हो जाने के कारण यह हाथी का सबसे महत्वपूर्ण तथा कार्यकुशल अंग बन गया है। अफ़्रीकी हाथियों की सूंड के छोर में दो अंगुलिनुमा उभार होते हैं, जबकि एशियाई हाथियों में केवल एक ही उभार होता है। एक तरफ़ तो हाथी की सूंड इतनी संवेदनशील होती है कि घास का एक तिनका भी उठा लेती है तो दूसरी तरफ़ इतनी मज़बूत भी होती है कि पेड़ की टहनियाँ भी उखाड़ ले।

अधिकांश शाकाहारी पशुओं के दाँतों की संरचना इस प्रकार की होती है कि वह पौधे के विभिन्न भागों को काट-फाड़ सकें। जबकि हाथियों में बीमार और बहुत छोटे बच्चों के अलावा, हाथी पहले अपनी सूंड से खाना फाड़ता है और फिर उस निवाले को अपने मुँह में पहुँचाता है। वह सूंड के द्वारा घास चरता है या फिर ऊपर पेड़ से पत्तियाँ, फल या समूची शाखायें तोड़ लेता है। अगर पेड़ में भोजन उसकी सूंड की पहुँच से भी परे है तो हाथी अपनी सूंड पेड़ के तने या शाखा में लपेटकर ज़ोर से झिंझोड़ता है ताकि फल इत्यादि नीचे टपक जाये या कभी-कभी पूरे का पूरा पेड़ ही उखाड़ देता है।

हाथी सूंड का इस्तेमाल पानी पीने के लिए भी करता है। अपने मुँह में उडेल देता है। नहाने के लिए भी हाथी इसी विधि का इस्तेमाल करता है। नहाने के बाद अपने गीले शरीर में हाथी सूंड से मिट्टी छिड़क लेता है जो सूखकर उसकी त्वचा के ऊपर पपड़ी का रूप ले लेती है और उसकी तेज़ धूप तथा परजीवियों से सुरक्षा करती है। अन्य स्तनपाइयों की तरह - सिवाय इन्सान और वनमानुष के, जिन्हे सीखना पड़ता है - हाथी भी बहुत अच्छा तैराक होता है। तैरते समय हाथी अपनी सूंड का इस्तेमाल स्नॉरकॅल की तरह करता है।

सूंड हाथी के सामाजिक कार्यकलापों के ऊपर भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। संबन्धी अपनी सूंडें एक दूसरे से लपेटकर अभिवादन करेंगे, जैसा मनुष्य हाथ मिलाकर करते हैं। इसका इस्तेमाल वह खेल करते हुए कुश्ती में, मिलन से पहले, माँ तथा बच्चे के सम्बन्ध में तथा अन्य कार्यकलापों में भी करते हैं। उठी हुयी सूंड चेतावनी या धमकी हो सकती है जबकि सिर नीचे करके झुकी हुयी सूंड समर्पण का संकेत हो सकती है। दुश्मन को हाथी अपनी सूंड से लपेटकर फेंक सकता है।

हाथी की सूंड में मनुष्य से कई गुणा अधिक घ्राण शक्ति होती है और वह अपनी सूंड ऊपर उठाकर तथा दाहिने बायें समुद्री दूरबीन (पॅरिस्कोप) की तरह लहराकर अपने खाद्य स्रोत, मित्र तथा शत्रु का पता लगा लेता है।

हाथी दाँत

हाथी के हाथीदाँत उसके दूसरी ऊपरी छेदक दाँत होते हैं। हाथीदाँत हाथी के जीवनकाल में निरन्तर बढ़ते रहते हैं। एक वयस्क नर के

हाथीदाँत लगभग एक वर्ष में 18 से. मी. की दर से बढ़ते रहते हैं। हाथीदाँत पानी, लवण तथा मूल खोदने के काम आते हैं। इसके अलावा पेड़ों की छाल छीलने, और अपने लिए रास्ता तैयार करने में भी हाथीदाँत का बड़ा योगदान होता है। इसके अलावा हाथीदाँत अपनी परिधि जताने के लिए पेड़ों में निशानदेही के लिए तथा कभी कभार अस्त्र-शस्त्र के लिए भी इस्तेमाल में लाए जाते हैं।

जैसे मनुष्य दाएँ या बाएँ हाथ का इस्तेमाल करने वाला होता है, उसी प्रकार हाथी भी आमतौर पर दाएँ या बाएँ हाथीदाँत इस्तेमाल करता है। मुख्य हाथीदाँत अमूमन थोड़ा छोटा होता है और उसके छोर कुछ गोल होते हैं क्योंकि उस हाथीदाँत का ज़्यादा इस्तेमाल हुआ होता है। नर और मादा अफ़्रीकी हाथी के लम्बे हाथीदाँत होते हैं जो वयस्क अवस्था में ३ मी. तक लम्बे और ९० कि. तक वज़नी हो सकते हैं। एशियाई हाथियों में सिर्फ़ नर के लम्बे हाथीदाँत होते हैं। मादा के बहुत छोटे या अमूमन नहीं होते हैं। एशियाई नर के अफ़्रीकी नर जितने लम्बे हाथीदाँत हो सकते हैं लेकिन वह बहुत पतले और हल्के होते हैं। आज तक सबसे वज़नी ३९ कि. का आंका गया है। हाथीदाँत में नक्काशी सरलतापूर्वक हो जाती है अत: कलाकारों ने इसे महत्ता दी जिसके कारण भारी सङ्ख्या में विश्व में हाथियों का विनाश हुआ।

दाँत

अन्य स्तनपाइयों की तुलना में हाथी के दाँतों की रचना बिल्कुल अलग होती है। पूरी उम्र भर उनके २८ दाँत होते हैं। यह हैं:-

- दो ऊपरी द्वितीय छेदक: यही हाथीदाँत कहलाते हैं।
- हाथीदाँत से पूर्व विकसित दूध के दाँत।
- १२ अग्रचर्वणक, जबड़े के हर तरफ़ तीन।
- १२ चर्वणक, जबड़े के हर तरफ़ तीन।

एशियाई हाथी के चर्वणक दाँत का प्रतिरूप

अन्य स्तनपाइयों के विपरीत, जिनके दूध के दाँत झड़ने के बाद स्थाई दाँत आ जाते हैं, हाथी के दाँत निरन्तर बदली होते रहते हैं। लगभग एक वर्ष की आयु में हाथीदाँत के अग्रगामी दूध के दाँत झड़ जाते हैं और हाथीदाँत उगने लग जाते हैं। किन्तु चबाने वाले दाँत (अग्रचर्वणक तथा चर्वणक) एक हाथी की आयु में क़रीब पांच बार या बहुत विरले ही छ: बार बदली होते हैं।

एक बार में केवल चार चबाने वाले दाँत (अग्रचर्वणक तथा/अथवा चर्वणक), एक-एक दोनों जबड़ों के दोनों तरफ़, प्रयोग में लाये जाते हैं (या केवल दो क्योंकि जबड़े के हर हिस्से में दूसरा दाँत पहले को बदली कर रहा होता है)। मानव दाँतों के विपरीत पक्के दाँत दूध के दाँतों को ऊपर की तरफ़ से नहीं धकेलते हैं। वरन् नये दाँत मुख के पिछले भाग में उगते हैं तथा पुराने दाँतों को आगे की तरफ़ धकेलते हैं जहाँ पुराने दाँत टूट-टूट कर गिर जाते हैं। अफ़्रीकी हाथियों में जन्म से ही चबाने वाले दाँतों का पहला समूह (सॅट) (अग्रचर्वणक) मौजूद होता है। जब शावक दो वर्ष का होता है तो दोनों जबड़ों के दोनों तरफ़ का पहला चबाने वाला दाँत गिर जाता है। यही प्रक्रिया दूसरे चबाने वाले दाँतों के समूह के साथ छ: वर्ष की आयु में होती है। 13 से 15 वर्ष की आयु तक तीसरा दाँतों का समूह भी जाता रहता है, तथा चौथा समूह 28 वर्ष की आयु में झड़ जाता है। पाँचवा समूह हाथी की 40 वर्ष की आयु तक चलता है। कदाचित छठा समूह हाथी के जीवन के अन्त तक चलता है। यदि हाथी 60 वर्ष की आयु से अधिक जीवित रह जाता है तो चर्वणक का आख़िरी समूह भी घिस-घिस कर ठूंठ भर रह जाता है तथा हाथी भली भांति खा भी नहीं सकता है।

त्वचा

अफ़्रीकी हाथी नहाते हुये

हाथियों को बोलचाल की भाषा में हाथी (अपने मूल वैज्ञानिक वर्गीकरण से) कहा जाता है, जिसका अर्थ मोटी चमड़ी के जानवरों से है। एक हाथी कि त्वचा २.५ सेंटीमीटर तक मोटी होती है। इसके शरीर का अधिकांश भाग अत्यंत कठोर होता है। हालांकि, मुंह और कान के भीतर के चारों ओर त्वचा काफ़ी पतली होती है। आम तौर पर, एक एशियाई हाथी की त्वचा में अपने अफ़्रीकी रिश्तेदार से अधिक बाल होते हैं। युवा हाथी में यह फ़र्क़ अधिक नज़र आता है। एशियाई शावकों की त्वचा अमूमन कत्थई रंग के बालों से ढकी रहती है। उम्र के साथ बाल गाढ़े रंग के होने के साथ-साथ कम होने लगते

हैं लेकिन उसके सिर और पूँछ में वह सदा रहते हैं।

हाथी यों तो स्लेटी रंग के होते हैं, लेकिन अफ़्रीकी हाथी अलग-अलग रंग की मिट्टी में लोटकर लाल या भूरे रंग के प्रतीत होते हैं। गीली मिट्टी में लोटना हाथी समाज की दिनचर्या का एक अभिन्न अंग होता है। न केवल लोटना सामाजिकरण के लिए अहम है बल्कि मिट्टी धूपरोधक का काम भी करती है और उसकी त्वचा को पराबैंगनी किरणों से बचाती है। हाथी की त्वचा कठोर होने के बावजूद संवेदनशील होती है। यदि वह नियमित रूप से मिट्टी का स्नान न करे तो उसकी त्वचा को जलने से, कीटदंश से और नमी निकल जाने से काफ़ी नुक़सान हो सकता है। मिट्टी में लोटने से त्वचा को हाथी के शरीर का तापमान नियंत्रित करने में मदद मिलती है। हाथी को अपनी त्वचा से शरीर की गर्मी निकालने में मुश्किल होती है, क्योंकि शरीर के अनुपात में त्वचा बहुत कम होती है। हाथी के वज़न और उसकी त्वचा के सतही क्षेत्रफल का अनुपात मनुष्य की तुलना में बहुत अधिक होता है। हाथियों को अपनी टांग उठाकर पैर के तालुओं को हवा देकर संभवत: ठण्डा रखने की कोशिश करते देखा गया है।

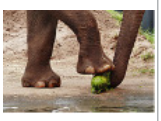

पैर

हाथी तरबूज़ को खाने से पहले अपने पैरों से कुचलता हुआ

संग्रहालय में रखा हाथी के पैर का नाखून

हाथी के पैरों कि बनावट मोटे स्तंभों या खंभों के समान होती है। हाथी को अपनी सीधी टांगों और बड़े गद्देदार पैरों की वजह से खड़े रहने में मांसपेशियों से कम शक्ति की आवश्यकता होती है। इसी कारण, हाथी बिना थके बहुत लंबे समय तक खड़े रह सकते हैं। वास्तव में, अफ़्रीकी हाथियों को शायद ही कभी लेटे हुए देखा जाता हो, सामान्यत: वे बीमार या घायल होने पर ही लेटते है। इसके विपरीत एशियाई हाथी अक्सर लेटना पसन्द करते हैं। हाथी के पैर लगभग गोल होते हैं। अफ़्रीकी हाथियों के प्रत्येक पिछले पैर पर तीन नाखून, और प्रत्येक सामने के पैर पर चार नाखून होते हैं। भारतीय हाथियों के प्रत्येक पिछले पैर पर पर चार नाखून और प्रत्येक सामने के पैर पर पांच नाखून होते हैं। पैर की हड्डियों के नीचे एक कड़ा, श्लेषी पदार्थ होता है जो एक गद्दे या शॉकर के रूप में कार्य करता है। हाथी के वज़न से पैर फूल जाता है, लेकिन वज़न हट जाने से यह पहले जैसा हो जाता है। इसी कारण से गीली मिट्टी में गहरा धँस जाने के बावजूद हाथी अपनी टांगों को आसानी से बाहर खींच लेता है।

अहिंसक भारत मांस से मुद्रा कमा रहा है

राजन नायर

अपना देश भारत अहिंसा और शाकाहार का देश कहलाने पर गर्व करता है,लेकिन पिछले दिनों चौंका देने वाली जानकारी प्राप्त हुई है। इस जानकारी से लगता है भारत सरकार मात्र पशुओं के मांस और हड्डियों का ही व्यापार नहीं करती है, बल्कि एक पशु के जितने अंग होते है उन सभी का नीलाम करते हुए भी हिंचकिचाती नही है। भारत सरकार येनकेन प्रकारेण अपनी विदेशी मुद्रा के भंडार को भरने के लिए रात दिन प्रयास करती रहती है। आकडे बताते है कि वर्ष 2010 में कुल मास उत्पादन 6.00 मेट्रिक टन था। उस समय की स्थिती के अनुसार भारत विश्व में 5 वे स्थान पर था। यदि आकडो में कहना हो तो भारत का उत्पादन 21.5 प्रतिशत था। 2011-12 में मास के निर्यात में जो वृध्दि हुई उसमें भैंस के मास योगदान प्रमुख रूप से था। भैंस मास के निर्यात से इस अवधि में 13727.20 करोड रू. भेड और बकरी के मास से 253.23 करोड रू.तथा मुर्गी पालन से ४७२.८२ करोड रू.प्राप्त हुए थे। अन्य दुधारू पशूओ से 287.40 करोड रू. पशूओ के चमडे से 28 करोड रू. प्रसंस्करित मांस से 31 करोड रू.एवं सूवर के मास से 3.49 करोड की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई थी। इतना ही नही नैसर्गिक रूप से मधुमक्खी का पालन करके 324.18 करोड रू.अर्जित किए गए। भारतीय भैंसो के मास से सबसे बडे बाजार वियत नाम मलेशिया,मिस्र,सऊदी अरब और जोर्डन है। 2011-12 के आकडे बताते है के भारत से निर्यात किए जाने वाले मास में 60 प्रतिशत की वृध्दि हुई है। इसमें 80 प्रतिशत मास भैसों का था। संपूर्ण दुनिया में जितनी भैसें है उनका 58 प्रतिशत भारत में है। भारत ने दुध के लिए सबसे उत्तम गाय को माना जाता है। लेकिन जब गाय का दुध नही मिलता उसकी कमी भैंस,बकरी से पुरी की जाती है। लेकिन लगातार दुधारू पशूओ की हत्या के कारण भारत के बाजार में दुध लगातार मंहगा बिकता है। इसी के कारण दुध के धंधे में मिलावट बढती जा रही है। मास के निर्यात से सरकार जिस विदेश मुद्रा के भंडार पर इतराती है,उसका यर्थाथ यह है कि,उसके होने वाली आय को वह अनुदान के रूप में व्यापारियों को लौटा देती है। यानि के एक हाथ से लेती दुसरे हाथ से इन मास का गोरख धंधा करनेवालो को वापस लौटा देती है। तो सवाल उठता है,इस व्यवसाय का देश को क्या लाभ मिलता है। इस मामले का दुसरा पक्ष यह भी है कि मास निर्यात में वृध्दि को मुल कारण कल्लखानो की संख्या बढते रहना है। एक समय था की देश में 400 बुचड खाने थे। आज बढते बढते इनकी संख्या 25 हजार तक पहुंच गई है।

पशु के मास और हड्डीयो के अतिरिक्त चमडा,आंत इससे प्राप्त होने वाली चरबी और इसके अतिरिक्त सीग तथा खुर,बाल और किडनी की झिल्ली का उपयोग इन दिनो मेडिकल साइस में बढता जा रहा है। जिनका मूल्य अरबो खरबो है। अब यदि कोई लालची सरकार और व्यापारी सोने देने वाली मुर्गी को काट एक साथ सोना प्राप्त कर लेना चाहते है,तो इसे मुर्खता ही कहा जाएगा।

पर्यावरण सरंक्षण एवम ओजोन परत

अनादि काल से मानव व जीव जगत का प्रकृति (पर्यावरण) से गहरा संबध रहा है। आज का विकसित मानव विकास की अंधी दौर में अपने पर्यावरण को समाप्त करने पर तुला हुआ है। जो समुचे सृष्टि के लिए चिंता का विषय है। हम प्रकृति को माँ के तुल्य मानते हुए भी उसके संरक्षण का भाव नहीं रखते। भौतिक वाद व विलासिता की दौड में हम प्रकृति को विकृत कर अपने ही चिराग से अपने घर को जला रहा है। जैसा कि हम जानते है कि, भारत की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। अतः इसके घातक परिणामों से हमें बचना होगा।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1665 में अपने प्रस्ताव संख्या 46/114 के माध्यम से हर साल १६ सितंबर का दिन अंतराष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इस दुनिया के तमाम लोगो में धरती के वातावरण के ऊपरी परत जिसे हम 'जीवन रक्षक' ओजोन परत के नाम से जानते है, के क्षीण होने के खतरों के बारे में जागरूकता बढाने का प्रयास किया जाता है। वास्तव में मानव गतिविधियों का दायरा दिन पर दिन बढता चला जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखे बिना भौतिकता,बिलसिता की वस्तुओं का उत्पादन बढ रहा है। अब जीवन रक्षक ओजोन परत के क्षरण से उत्पन्न खतरे के लिए रेड एलर्ट (अधिकतम चौकसी) बरतना जरूरी हो गया है। विलासिता वाली वस्तुओं जैसे सडकों पर दौडने वाले वाहन, रेफ्रिजिरेटर,एअर कन्डीशनर,अग्निशमक उपकरा,डस्ट स्प्रे यानि छिडकाव करने वाले उपकरण,जीवनाशी रसायनों का उत्पादन व गैसों के बढते प्रयोग से ओजोन परत का क्षरण तेज हो गया है। कई विकासशिल देशों ने तो ऐसे रसायनों व प्रक्रियाओं पर पाबन्दियाँ लगा दी है,जिससे ओजोन परत को नुकसान पहुँचता है।

ओजोन परत है क्या?

हमारे वायुमंडल में ओजोन बहुत कम मात्रा में विद्यमान रहती है। हवा के हर एक करोड अणुओं में से करीब ३ अणु ओजोन के होते है। इतनी कम मात्रा में उपस्थिती के बावजूद ओजोन हमारे वायुमंडल में अंत्यत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। धरती के वातावरण के दो क्षेत्रों में यह पायी जाती है। इसकी 60 प्रतिशत मात्रा पृथ्वी की सतह से 8-18 किलोमीटर ऊँचाई से लेकर करीब 50 किलोमीटर की ऊँचाई तक की वायुमंडलीय पट्टी में विधमान रहती है। वायुमंडल के इस हिस्से को स्ट्रैस्फीयर कहा जाता है। इस सतह पर पायी जाने वाली ओजोन को ही आम तौर पर ओजोन परत कहा जाता है। बाकी 10 प्रतिशत ओजोन वायुमंडल के निचले क्षेत्र में मिलती है। इस क्षेत्र को आम तौर पर ट्रोपोस्फीयर कहते है। मोटर वाहनों के धूएँ तथा अन्य स्रोंतो से निकलने वाला हानिकारक धुआं यही आकर जमा होता है। वायुमंडल के दोनो क्षेत्रों में पाए जाने वाले ओजोन के अणु रासायनिक दृष्टि से एक समान होते है। मगर मनुष्यों तथा अन्य जीवधारियों पर इनका प्रभाव पडता है।

वायुमंडलीय ओजोन सूर्य की धूप में विद्यमान और जैव दृष्टि से नुकसानदेह अधिकतर अल्ट्रावायलेट (पराबैंगनी) किरणों का अवशोषित कर बडा उपयोगी कार्य करती है। ओजोन अणुओं द्वारा अवशोषित हो जाने के कारण इन किरणों का बहुत ही छोटा हिस्सा धरती की सतह पर पहुंचता है और जीवधारी इसके दुष्परिणामों से बच जाते है। पराबैंगनी विकिरण के अवशोषण से स्ट्रैस्फीयर में ताप भी उत्पन्न होता है। ओजोन परत छननी की तरह सूर्य के प्रकाश में विद्यमान घातक पराबैंगनी किरणों को धरती की सतह पर पहुंचने से रोकता है। इस तरह पृथ्वी के जीवधारी इन कारणों के खतरनाक असर से बचे रहते है।

ओजोन परत का निर्माण :

रासायनिक दृष्टि से ओजोन का निर्माण आक्सीजन के तीन परमाणुओं से मिलकर होता है। वायुमंडल के स्ट्रैटोस्फीयर की ऊपरी परतों में लघु तरंग लंबाई वाले पराबैंगनी विकिरणों से इसका निर्माण होता है। आक्सीजन के अणु 240 नैनोमीटर से कम तरंग लंबाई के विकिरणों को सोख लेते है और आक्सीजन परमाणु में बदल जाते है। ये आक्सीजन परमाणु अन्य आक्सीजन परमाणुओं के साथ मिलकर ओजोन का निर्माण करते है।

ओजोन की मात्रा का मापन डाब्सन यूनिट (डीयू) में किया जाता है। यह नाम 1620 से 1660 के दौरान वायुमंडलीय ओजोन के बारे में अनुसंधान करने वाले वैज्ञानिक जीएमबी डाब्सन के नाम पर रखा गया है। धरती की सतह से 15 किलोमीटर की ऊंचाई पर ओजोन अणुओं की प्रति घन सेंटीमीटर संख्या 10 अणु प्रति घन सेंटीमीटर होती है। जो 25 किलोमीटर पर 10 अणु प्रति घनमीटर हो जाती है। 45 किलोमीटर पर यह मात्रा 10 अणु प्रति घन मीटर रह जाती है। दिन और रात के समय भी वायुमंडल में ओजोन की मात्रा में मामूली सा अंतर आता है।

ओजोन परत का क्षरण व दुष्परिणाम :

धरती पर स्थित और उपग्रहों पर लगाये गये उपकरणों की सहायता से वायुमंडलीय ओजोन के क्षरण की पुष्टि हुई है। अमरीकी अंतरिक्ष एजेंन्सी नासा की हाल की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि, अंटाकर्टिका का ओजोन छिद्र और बडा होता जा रहा है। दो वर्ष पूर्व लिए गए आकडो की तुलना में इसका विस्तार हुआ है। इस समय इसका आकार से सौ गुना ज्यादा है। ओजोन को नष्ट करने वाले यौगिकों में क्लोरीन,फ्लोरीन,ब्रोमीन,कार्बन व हाइड्रोजन आदि तत्वों के रासायनिक संयोग से बने अनेक पदार्थ शामिल है। जिन्हे हैलोकार्बन कहते है। जिन यौगिक में केवल क्लोरीन,फ्लोरीन व कार्बन को ओ.एस.डी. (ओजोन डिप्लीटिंग सब्सटेंसेज) यानि ओजोन नष्ट करने वाले पदार्थ कहा है।

वास्तव में होता यह है कि अंटार्कटिका क्षेत्र के स्थान विशेष पर बनने वाले वर्टेक्स अति शीतल वायु के बवन्डर के कारण तापमान में अत्यधिक कमी आ जाती है। जिससे ओजोन क्षरण करने वाले तत्वों को अपनी क्रियाओं के लिए उचित वातावरण उपलब्ध हो जाता है। इतनी ही नही पराबैंगनी किरणों का सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव भी यही देखने को मिलता है। पराबैंगनी किरणों की वजह से यहां के निवासियों में कई बिमारियां बढ रही है। जिनमें त्वचा कैंसर प्रमुख है। इस पराबैगनी किरणो के दुष्प्रभाव सबसे पहले १६०३ में नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक नील्स पिंसेन ने पता लगाया था। उन्होंने यह बताया था कि पराबैगनी किरणों की थोडी मात्रा त्वचा की क्षय रोग को ठीक कर सकती है। लेकिन चेचक पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पडता है। बाद में कई वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि इन किरणें का फेफडों के क्षय रोग पर भी काफी बुरा प्रभाव पडता है। हांलाकि शरीर में विटामीन डी के उत्पादन के लिए पराबैंगनी किरणें की जरूरत होती है लेकिन यदि यह मात्रा भारी हो जाए और शरीर में पहुंच जाए तो शरीर के समूचे तंत्र बिगाड कर रख देती है और कई प्रकार की एलर्जियां पैदा कर देती है। पर्यावरण के असंतुलन की दशा में यदि जलवायु संबधी परिवर्तन को रोकने का कोई ठोस उपाय न किया गया तो समुचे विश्व को तापमान वृद्धि से बचाया नहीं जा सकता है। आज समूचा विश्व ग्लोबल वार्मिंग (विश्व तापमान में वृद्धि) की चपेट में है तथा विकसित राष्ट्रों द्वारा ग्रीन हाऊस गैसों के अंधाधुंध उत्पादन से ओजोन परत का क्षरण होता जा रहा है। इसको रोकने के लिए विश्व के विकसित और विकासशील राष्ट्रों को ठोस उपाय करने ही होंगे। भारत के लिए यह अत्यधिक चिंता का विषय है। अतः बढते औद्योगीकरण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी जरूरी हो गया है। आज सभी महसूस कर रहे है। परंतु आज की विषम,भयंकर एवम उलझती हुई परिस्थितियों के अनुरूप के बारे में दी जाने वाली पर्यावरण का संरक्षण अकेले किसी राज्य अथवा राष्ट्र की बात नही है इसके लिए जन सहभागिता और जन सहयोग अत्यंत आवश्यक है। यह मानी हुई बात है कि जीव जगत व वनस्पती जगत एक दूसरे के पूरक है यानि एक दूसरे पर पूरी तरह निर्भर। इसलिए यह जरूरी है कि इन्सान प्रकृति (पर्यावरण) का सही तरह से संरक्षण के महत्व को समझे लोगो को समझायें,जो इस चक्र को अनजाने में तोड रहे है और अपने शोध कार्यक्रमो में इसका समावेश कर जागरूकता को बढावा दे। यह प्रयास भी देश की एक बडी सेवा होगी। वास्तव में आज सहस्ताब्दि संदेश यही कहता है कि--

अपने आकाश को बचावो,
अपने आपको बचावो,
ओजोन परत को बचाओ,व
पर्यावरण को बचाओ।

डॉ.सियाराम विश्वकर्मा एवंम डॉ.भूपेंद्र नारायण सिंग

एक नीम...अनगिनित लाभ

नीम भारतीय उपमहाद्वीप का एक सदाबहार वृक्ष है यह एशिया, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और मध्य व दक्षिण अमेरिका के अनेक अन्य देशों में भी व्यापक रूप से उगता है। यह वृक्ष लवणीय व क्षारीय मिट्टी वाली भूमियों तथा अन्य बंजर भूमियों में आसानी से उग आता है। इसे वीथियों में, शोभाकारी वृक्ष के रूप में, कृषि वानिकी के लिए और सडकों के किनारे छाया के लिए उगाया जाता है। सदियों से यह वृक्ष अपने औषधीय व कीटनाशी गुणों के कारण भारतीय जनमानस में आदर का पात्र रहा है। चिकित्सा की आयुर्वेद व यूनानी पद्धतियों में औषधियां तैयार करने के लिए इस वृक्ष के विभिन्न भागों का उपयोग किया जाता है। शायद ही कोई ऐसा रोग हो जिसके उपचार में नीम का उल्लेख न हुआ हो। सदियों पुरानी प्रथा रही है कि भंडारित गेहूं, चावल व अन्य अनाजों में भृंगों, कीटों व अन्य नाशक जीवों से बचाव के लिए नीम की पत्तियों को कपडे में लपेट कर रखा जाता है। वर्तमान में, कृषि में नाशीजीव नियंत्रण के एजेंट के रूप में नीम की सशक्त भूमिका को स्वीकार किया गया है। विषैले कृत्रिम नाशकजीव नाशियों के हानिकारक प्रभावों के प्रति जनसामान्य की निरंतर बढती हुई चिंता को ध्यान में रखते हुए नीम के उत्पादों को इन कृत्रिम नाशकजीव नाशियों का श्रेष्ठ विकल्प माना गया है। कृत्रिम नाशकजीव नाशियों से जुडी समस्याएं जैसे नाशकजीव प्रतिरोध, पर्यावरणीय संदूषण, खाद्य पदार्थों, चारा और रेशों में विषाक्त अपशिष्ट, चिरकालिक आविषालुता, गैर लक्षित जीवों में व्यवधान आदि नीम पर आधारित नाशकजीव नाशियों के उपयोग से लगभग समाप्त ही हो जाती है। नीम पर किए गए आरंभिक अध्ययन मुख्यतया इसकी खली के नाशकजीव नाशी मानों के साथ इसके खाद संबंधी गुणों व मिट्टी की दशा को सुधारने से संबंधित थे। पिछली शताब्दी के दशक में संस्थान के रसायन विज्ञानियों ने नीम के कार्बनिक विलायकों में जैव सक्रिय रसायनों का उपस्थित होना सिद्ध किया। संस्थान के कीट विज्ञानियों ने नीम के कीटनाशी गुणों की खोज की। यह पाया गया कि निबौलियों को पानी में घोलकर तैयार किया गया घोल प्रवासी व रेगिस्तानी टिड्डियों के आहार को अखाद्य बना देता है। इस घोल को सांद्रता से टिड्डियों के आक्रमण के दौरान जब संस्थान के खेतों में खडी फसलों पर छिडका गया तो उससे फसलों का टिड्डियों से सफलतापूर्वक बचाव हुआ। रेगिस्तानी टिड्डियां खडी फसल पर बैठी तो जरूर लेकिन उन्हें आहार नहीं बना सकी। टिड्डियों के दल ने आसपास खडे नीम के वृक्षों पर भी आक्रमण नहीं किया। इन निष्कर्षों से पूरी दुनिया का ध्यान नीम की ओर आकृष्ट हुआ तथा इसका उल्लेख रैकल कार्सन ने अपनी पुस्तक "साइलेंट स्प्रिंग" में मनुष्य व उसके पर्यावरण को कृत्रिम नाशकजीवनाशियों से होने वाले संभावित खतरों का जिक्र करते हुए किया।

नीम विभिन्न उपयोगी उत्पादों का बार-बार प्रयोग में लाया जाने वाला स्रोत है। इसका उपयोग औषधियों, साबुन बनाने, नाशकजीव नियंत्रण, नाइट्रीकरण निरोधक, धीमे पोषक तत्व विमोचित करने वाली खाद ,पशुओं के चारे, ईंधन ,उर्जा आदि के लिए किया जाता है। यह नाशीजीवनाशियों तथा संबंद्ध उत्पादों का अकेला सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभरा है। इस वृक्ष के सभी भाग जैसे पत्तियां, फूल, फल, बीज, गिरी, छिलका, लकडी और टहनियां आदि जैविक रूप से सक्रिय होते हैं और इनमें सर्वाधिक उपयोगी नीम की निबौली होती है। नीम पर आधारित जैव नाशकजीव नाशी विविध सक्रियता के गुणों से युक्त होते हैं और गैर लक्षित जीवों के प्रति अपेक्षाकृत सुरक्षित होते हैं।

कीटों, पादप सूत्रकृमियों, पौधों के रोगजनकों आदि के विरूद्ध अनेक क्रियाओं सहित नीम में व्यापक स्तर की सक्रियता देखी गई है। विश्वभर में नीम से ५०० से अधिक नाशीजीव प्रजातियों का नियंत्रण होता है। कीटों के विरूद्ध इसके दीर्घकालिक प्रभाव विभिन्न प्रकार के खेत व घरेलू कीटो, नाशकजीवों, कृषि को संक्रमित करने वाले जीवाणुओं के विरूद्ध प्रभावी सिद्ध हुए हैं। कृषि में नीम के उत्पादों को धीमे नाइट्रोजन विमोचित करने वाले पदार्थों और नाइट्रीकरण निरोधकों के रूप में उपयोगी पाया गया है।

नीम के रसायनिक घटक

नीम में बड़ी संख्या में रसायनिक रूप से विविध और संरचनात्मक दृष्टि से जटिल जैव सक्रिय उत्पाद होते हैं। कुछ क्षमतावान यौगिकों में अनेक एजाडिरक्टिनॉइड, सेलानिन, डेसएेसिटाइल सेलानिन, निम्बिन, डेसएसिटाइल निम्बिन आदि सम्मिलित हैं। इस वृक्ष पर जैव सक्रियता से संबंधित अनुसंधान मुख्यतः एजाडिक्टिन पर केन्द्रित रहे क्योंकि इसकी प्रचुर व विशिष्ट क्रियाविधि है। इससे कीट अचानक ही नहीं मरते हैं वरन् उनके शरीरक्रियाविज्ञानी और व्यवहारिक क्रियाओं में परिवर्तन होता है, जिससे उनकी मृत्यु होती है। एजाडिरेक्टिन के दो अंशों नामतः डाइहाइड्रोफ्यूरानोएसिटॉल और डिकेलिन मॉइटिस की संरचना-सक्रियता से संबंधित अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि इनमें से पहला महत्वपूर्ण प्रतिआहारक सक्रियता से युक्त है जबकि बाद वाले से कीटों की बढ़वार व विकास प्रभावित होते हैं। नीम रसायन विज्ञान में सबसे बड़ी उपलब्धि इम्पीरियल कॉलेज, लंदन में डॉ. स्टीवन ले के नेतृत्व में रसायन विज्ञानियों के एक समूह द्वारा इन दोनों रसायनों का संश्लेषण करना था। एजाडिरेक्टिन, उष्मा, प्रकाश, जल, पी एच, सूक्ष्मजीवों आदि के प्रति अस्थिर है क्योंकि खेत अवस्थाओं में इसकी प्रभावी आयु अल्प होती है। इसके प्रभाव को स्थिर करने के अनेक प्रयास किए जा चुके हैं इसके अवकृत अपकर्ष नामतः डाइहाइड्रो-और टेट्राहाइड्रो-एजाडिरेक्टिन प्रकाश, उष्मा,नमी आदि के प्रति अधिक स्थिर होते हैं और इस प्रकार अपनी जैव सक्रियता बनाए रहते हैं। विविध जैव सक्रिय घटकों को निषकर्षित करने और विलग करने के प्रोटोकॉल विकसित किए गए। कीटविज्ञानियों, रोगविज्ञानियों और सूत्रकृमिविज्ञानियों के सहयोग से नीम के नाशकजीवनाशी घटक का जैव मूल्यांकन-निर्देशित विलगन किया गया।

पौधे लगाये जीवन पाए

प्रकृति को शुद्ध रखने में पेड-पौधों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बड़े से लेकर छोटे से पौधे तक में प्रकृति की वह क्षमता है जो आज की आधुनिकतम तकनीक से भी संभव नहीं है। यह शक्ति है सूर्य की किरणों की मौजूदगी में पेड की पत्तियों में मौजूद क्लोरोफिल (हरित पदार्थ) द्वारा कार्बन डायऑक्साइड को लेकर कार्बोहाइड्रेटस (एक प्रकार की शकर या स्टार्च) में बदलने और वातावरण में शुद्ध ऑक्सीजन छोडने की।

पहले तो खेतों की मेड़ के आसपास बबूल, खेजड़ी, साल, सागौन जैसे वृक्ष लगाए जाते थे। कुएँ या बावड़ी, नहर-नदी आदि के आसपास आम, जामुन, कटहल, जामफल, सीताफल जैसे फल वृक्षों को लगाया जाता था। पेड़ों पर रहने वाली चिड़ियों का फसल की कीड़ों से रक्षा करने में बहुत बड़ा योगदान रहता है। प्रकृति प्रति वर्ष हमें अवसर देती है ताकि हम अपने आसपास उपलब्ध जगह में पेड़-पौधे लगाकर वातावरण को अपने अनुकूल बनाने में योगदान कर सकें। अपने मोहल्ले, गाँव, नगर को हराभरा बनाने के लिए जगह की कमी नहीं है। कमी है तो सोच की, निष्ठा की, ईमानदारीपूर्वक किए जाने वाले प्रयास की। हरियाली का सबसे अधिक लाभ मिलता है तो उस क्षेत्र विशेष में रहने वाले व्यक्ति और उसके परिवार के प्रत्येक सदस्य को। आपके आसपास के क्षेत्र में पेड़ों की कमी, कॉर्बन डाईऑक्साइड के बढ़ने, ऑक्सीजन के कम होने, वाहनों के कारण होने वाली ध्वनि प्रदूषण आदि का कारण बनता है। इनसे उत्पन्न होती है अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ। अगर प्रत्येक व्यक्ति या प्रत्येक परिवार यह निश्चय कर ले कि वह एक पेड़ लगाकर उसका पालन-पोषण करेगा, तो निश्चय ही कुछ वर्षों में अपिका क्षेत्र हरिमामय हो जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में तो खेतों के आसपास, कुएँ के पास, नहर, तालाब आदि के आसपास, सड़क के किनारे, पंचायत भवन, स्कूल, सहकारी संस्था भवन, मंदिर, मस्जिद या धार्मिक स्थल चरागाह आदि क्षेत्रों में उपयुक्त स्थान आसानी से मिल सकता है। शहरी क्षेत्र में कॉलोनी की सड़क पर, हर कॉलोनी में पार्क के लिए छोड़ी गई जगह में, धार्मिक स्थलों पर, सरकारी भवन आदि जगह लगाए जा सकते हैं।

क्या आवश्यक है : पेड़ की प्रजाति का चयन उपलब्ध स्थान के अनुसार छोटे, मध्यम या बड़े पेड़ों से करें। पेड़ लगाने से पूर्व उस स्थान की भविष्य की योजना, मास्टर प्लान आदि की जानकारी होना आवश्यक है। शासकीय कार्यालयों, न्यायालयों, पंचायत भवन, विद्यालयों आदि के लिए छायादार बड़े व कुछ शोभाकारी वृक्षों का चयन किया जाना चाहिए। धार्मिक स्थलों के लिए धार्मिक महत्व वाले पीपल, बेलफल, कदंब, बरगद आदि उपयुक्त रहेंगे।

शहरों में रहवासी कॉलोनियों में चौड़ी सड़कों के लिए शोभाकारी फूलों वाले पेड़ गुलमोहर, अमलतास, नीला गुलमोहर, मोरसली, कदंब, सिल्वर ओक, आकाश नीम आदि लगाए जा सकते हैं। शहरों की नियोजित नई कॉलोनियों में उद्यान में कुछ पेड़ बड़े व छायादार जैसे नीम, पीपल, बरगद, बीच में या कोनों पर गोल चबूतरा सा बनाकर लगाए जा सकते हैं।

सामान्य उपज के लिए करे - फसल प्रबंधन

प्रबंधन या मैनेजमेंट किसी भी व्यापार-व्यवसाय में जितना जरूरी है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है फसल उत्पादन में। फसल उत्पादन में जोखिम व्यापार-व्यवसाय की अपेक्षा कई गुना ज्यादा है। आदर्श फसल प्रबंधन का सबसे पहला व महत्वपूर्ण घटक है वानस्पतिक विविधता। प्रकृति में पेड़, झाड़ी, बहुवर्षीय फसलें, एकवर्षीय फसलें, मौसमी घास, चारे आदि अनेक वर्ग के पेड़-पौधे पाए जाते हैं।

फसलों में भी अनाज, दलहन, तिलहन, रेशा, शकर, पशु चारा, औषधि व सुरभीय फसलों में से उपयुक्त मिलान किए जा सकते हैं। ये उपयोग की दृष्टि से ही नहीं वरन वानस्पतिक कुल के हिसाब से भी अलग-अलग वर्ग के हैं। इनकी मौसम, मिट्टी और पोषण संबंधी जरूरतें अलग-अलग होती हैं। इसलिए इन्हें मिलाकर मिश्रित फसल या अंतरवर्ती फसल पद्धति से उगाए जाने पर मिट्टी, मौसम, पोषण, सिंचन, कीड़े और रोग संबंधी जोखिम भी कम होने की संभावना रहती है। इस पद्धति से किसान को किसी न किसी फसल की अच्छी उपज मिलकर दूसरी फसल की कम उपज की क्षतिपूर्ति हो ही जाती है। इसी रबी के मौसम में छः-सात सिंचाई वाले गेहूँ एक हैक्टेयर में लगाने की अपेक्षा एक या दो सिंचाई चाहने वाले गेहूँ दो हैक्टेयर में लगाने पर उतने ही पानी में कुल उत्पादन अधिक मिल सकता है। सीमित सिंचाई वाले गेहूँ की अकेली फसल की अपेक्षा गेहूँ के साथ चना, अलसी, सरसों आदि फसलें अलग-अलग कतारों में अंतरवर्ती फसल के रूप में लेना अधिक लाभदायक हो सकता है।

कतारों का अनुपात मुख्य और सहायक फसल में अलग-अलग रखा जा सकता है। मुख्य फसल की कतारों की संख्या अधिक और सहायक फसल की कतारों की संख्या कम रखी जाती है।

उज्जैन व मंदसौर क्षेत्र में गेहूँ की 8-10 कतारों के बाद सरसों, राई की दो कतारें लगाई जाती हैं। गेहूँ (सीमित सिंचाई) की 4 या 6 कतारों के साथ चने या अलसी की दो कतारें लगाई जा सकती हैं। इसी प्रकार जौ की ४-६ कतारों के साथ चने की दो कतारें बोई जा सकती हैं। असिंचित क्षेत्रों में एक बार पलेवा करके अलसी, मसूर या चना लगाया जाता है। यहाँ भी अलसी दो कतारों के बीच चना या मसूर की दो कतारें लेना लाभदायक हो सकता है। सामान्यतः अलसी की चार से आठ कतार की पट्टियाँ गेहूँ या चने के खेत के आसपास लगाई जाती हैं। अलसी के पौधों को पशु नहीं चरते हैं, इसलिए ये फसलें भी नुकसान से बच जाती हैं।

अंतरवर्ती फसल पद्धति में मुख्य फसल की उपज उस अकेली फसल से कुछ कम हो जाती है, परंतु मुख्य व सहायक दोनों फसलों की उपज मुख्य फसल की अकेली उपज से सवा से डेढ़ गुना तक मिल जाती है। साथ ही सहायक फसल दलहन वर्ग की हो तो उसके द्वारा वातावरण से ली गई नत्रजन मुख्य फसल को भी मिल जाती है। इस प्रकार उर्वरक पर होने वाले खर्च में कुछ कमी की जा सकती है। अंतरवर्ती फसल पद्धति में मौसम की असामान्यता व रोग कीड़ों से हानि तथा एक ही फसल की उपज के बाजार भाव में होने वाले उतार-चढ़ाव की जोखिम दो फसलों के उत्पादन के कारण कम होने की संभावना रहती है। यदि आप एक ही फसल लेना चाहते हैं तो उसकी भी एक ही किस्म उगाने की अपेक्षा अलग-अलग तीन-चार किस्में उगाना कम जोखिमभरा होगा।

यदि आप सही हैं तो आपको गुस्सा होने कि जरूरत नहीं..
और यदि आप गलत हैं तो आपको गुस्सा होने का कोई हक नहीं....

लाल बाग के राजा के बदलते स्वरूप

पाक्षिक राशी फल अगस्त–2013

(16/9/2013 से 31/9/2013)

(पं.महेन्द्र दाधीच)

मेष :– पारिवारिक मामलो में खर्च होगा। शुभ कार्य होंगे दांपत्य जीवन में सुधार होगा।
दैनिक व्यापार में सफलता मिलेगी। भाईयो का सहयोग मिलेगा और शत्रु प्रभावहीन होंगे।

वृष :– शत्रु प्रभावहीन होंगे। मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा लेखन कार्य से जुड़े प्रगति पायेगें। व्यापार–व्यवसाय में समय सुखद रहेगा नौकरी पेशा सहयोग पायेगें। आर्थिक मामलो में सफलता मिलेगी।

मिथुन :– उत्साह में वृद्धि होगी कार्य में प्रगति पायेगें। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु वर्ग प्रभावहीन होगें धन के मामलो में स्वप्रयत्नो से सुधारवादी रहेगा। सन्तान पक्ष का सहयोग मिलेगा।

कर्क :– पारिवारिक मामलो में खर्च होगा। व्यस्तता रहेगी, जमीन जायदाद के मामलो में सावधानी रखनी होगी नौकरी पेशा संभलकर चले.

सिंह :– अपने सामर्थ्यानुसार सफलता पायेगें। स्वास्थ्य की वृद्धि से समय ठीक रहेगा शत्रु पक्ष प्रभावहीन होगें मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा। नौकरी पेशा लाभान्वित होगें परिवार से सहयोग मिलेगा।

कन्या :– थोड़ी समझदारी से चले तो मास अनुकुल कहा जा सकता है नौकरी पेशा के लिये समय ठीक–ठाक रहेगा पारिवारिक मामलो में समय उत्तम रहेगा सोचे कार्य भी बनेगे।

तुला :– समय का सदुपयोग कर अपने कार्य में सफलत होगे। मित्रो, स्वजनो का सहयोग लाभकारी रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी दांपत्य जीवन में मधुर वातावरण बना रहेगा स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक :–दैनिक व्यवसाय में सावधानी रखनी होगी। स्त्री पक्ष के स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो सकती है प्रभाव में वृद्धि होगी नौकरी पेशा संभलकर चले आर्थिक सावधानी रखें।

मकर :–स्वास्थ्य ठीक रहने से काम काज में मन लगेगा। स्त्री पक्ष का सहयोग लाभकारी रहेगा, पारिवारिक मामलो में समय सुखद रहेगा, नौकरी पेशा समय का लाभ पायेगें शत्रु वर्ग प्रभावहीन होंगे।

कुंभ :– भाग्योन्नति में थोड़े परिश्रम से प्रगति होगी। शत्रु पक्ष प्रभावहीन होंगे। धन लाभ के योग भी बनेंगे। व्यापार व्यवसाय में समय अनुकुल रहेगा नौकरी पेशा राहत पायेगें।

मीन :– मकान भूमि सम्बन्धित मामलो में अनुकुल स्थिति पायेंगे। मातृ पक्ष से चिंता दूर होगी, स्वास्थ्य ठीक रहेगा नौकरी पेशा व्यक्ति सुखद स्थिति पायेंगे, दाम्पत्य जीवन में मिलीजुली स्थिति रहेगी।

स्वादिष्ट मोतीचूर के लड्डू

गणेश चतुर्थी पर लड्डू ना बनाया जाए ऐसा तो हो ही नहीं सकता। आपने बाजार से खरीद कर मोतीचूर के लड्डू तो खूब खाए होंगे क्यों ना इस गणेश चतुर्थी पर आज घर पर ही इसे बनाये जाएं। यब बनाने में बहुत आसान है और इसे बनाने में ज्यादा समय भी नहीं लगता। मोतीचूर का लड्डू बनाने के लिये केवल बेसन का प्रयोग होता है जिसमें केसरिया रंग मिलाने की जरुरत होती है बस। तो आइये करते हैं मोतीचूर के लड्डुओं से गण्पती बप्पा का मुंह मीठा। सामग्री- बेसन- दो कप शक्कर - तीन चौथाई कप खाने वाला केसरिया रंग - एक चौथाई चम्मच देसी घी - दो कप बादाम - दो टी स्पून (पीसा हुआ) इलायची पाउडर - आघा टी स्पून

विधि- बेसन को पानी में घोल कर गाढ़ा मिश्रण तैयार कर लें। इसमें केसरिया रंग डालें। कड़ाही में घी गर्म करें और इसमें किसी छन्ने की सहायता से बेसन डालकर बूंदी तल लें। एक अलग कड़ाही में बराबर मात्रा में पानी और शक्कर मिलाकर एक तार की चाशनी बनाएं। इसमें बूंदी और बादाम व इलायची पाउडर डालें और अच्छी तरह मिलाएं। हल्का ठंडा हो जाने पर इस मिश्रण से लड्डू बना लें। लड्डुओं को थाली में सजाकर सूखने के लिए अलग रख दें। आपका मोतीचूर का लड्डू तैयार है।

घर बैठे सृष्टी एग्रो मंगने के लिए भर कर भेजें

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः..
संस्था का नामः..
पूरा पताः..
ग्राम :.................................तहसील :...
जिलाः...................................राज्यः...........................पिन कोड
दूरभाष कार्यः...................................निवासः...................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :१५०   तीन वर्ष३५०:   पांच वर्ष :५००

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :...................................
बैंक का नामः................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः......................दिनांकः................
स्थानः................................. प्रतिनिधि का नामः......................हस्ताक्षर सदस्यः................
दिनांकः......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर   एवं संस्था सील

विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन

जयपुर, खाद्य सुरक्षा अध्यादेश, 2013 के क्रियान्वयन के संबंध में ग्राम पंचायत स्तर पर पात्र परिवारों/व्यक्तियों की सूची बनाने के लिए राज्य भर की समस्त ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाएं आयोजित होगी। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री **सी.एस. राजन ने बताया कि आपत्ति प्राप्त नहीं होने वाले परिवारों/लाभान्वितों की सूची का** अनुमोदन इन सभाओं में होगा। जिन प्रकरणों में आपत्ती होगी, उनमें आपत्तियों के निर्णय के पश्चात अनुमोदन प्रदेश की समस्त ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल एवं पोषण समिति की बैठक भी सरपंच की अध्यक्षता में आयोजित करवाने के लिए सभी जिला परिषदों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को निर्देश दिये गये हैं। बैठक में मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए गांव के आस-पास पानी भरे गढ्ढों में जला हुआ तेल छिड़कवाने, एन्टी लार्वा गतिविधि के लिए हेचरी निर्माण, गंदे पानी की निकासी, कचरा निस्तारण के लिए कार्य योजना का अनुमोदन होगा।

नीमराना में सौर ऊर्जा परियोजना को मिली मंजूरी

जयपुर, दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक गलियारा (डीएमआईसी) ट्रस्ट ने राज्य के नीमराना में सौर ऊर्जा परियोजना सहित देश में कुल नौ परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान की है।

भारत सरकार के वित मंत्रालय में आर्थिक कार्य विभाग में सचिव, श्री अरविंद मायाराम की अध्यक्षता में दिल्ली में आयोजित हुई डीएमआईसी ट्रस्ट की बैठक में केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों और निजी क्षेत्रों से कुल 1,20,000 करोड़ रुपये के निवेश की नौ परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान की गई ।

श्री मायाराम ने बताया कि राजस्थान के नीमराना में मॉडल सौर विद्युत परियोजना राजस्थान -दिल्ली-मुम्बई औद्योगिक गलियारा परियोजना की एक अनूठी पहल है, जिसकी औद्योगिक डीजल जेनरेटर सेट के साथ सौर उर्जा के एकीकरण की अवधारणा को प्रदर्शित करने के लिये देश में पहली बार स्मार्ट माइक्रो ग्रिड परियोजना के रूप में कल्पना की गई है। उन्होंने बताया कि इन परियोजनाओं से भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये 2,15,000 प्रत्यक्ष रोजगार और 6,18,000 अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

उनहोंने बताया कि एनईडीओ और हिटाची की सांझेदारी में डीएमआईसीडीसी 6.00 मेगावाट पॉवर सोलर फोटोवोल्टिक बिजली परियोजना और नीमराना औद्योगिक पार्क में एक मेगावाट डीजल जनरेटर बिजली परियोजनाओं की जापानी जोन में स्थापना की जाएगी ।

बैठक में सचिव औद्योगिक नीति एवं संवर्धन, श्री सौरभ चंद्रा, सी.ई.ओ. व एम.डी. डी.एम.आइ.सी. श्री अमिताभ कांत और संयुक्त सचिव व्यय, श्री सौरभ गर्ग ने हिस्सा लिया।

कृषि मंत्री ने किया नवनिर्मित 33 के.वी. जी.एस.एस. का लोकार्पण

जयपुर, कृषि मंत्री श्री हरजीरामजी बुरड़क ने नागौर जिले में लाडनूं के छिंपोलाई नाडी में आरएपीडीआरपी योजना के तहत बने नवनिर्मित 33/ 11 केवी के सब-स्टेशन का लोकार्पण किया। लोकार्पण के बाद उन्होंने इस सब-स्टेशन के लिए भूमि देने वाले दानदाता का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह भूमि मिलने के बाद विभाग ने इस सब-स्टेशन का निर्माण कम समय में ही पूरा किया है।

इस दौरान कृषि मंत्री ने जिक्र किया कि राजस्थान कृषि के साथ साथ बागवानी के क्षेत्र में भी प्रगति कर रहा है। कृषि उत्पादन में राज्य जहां लगातार दो बार पहले स्थान पर रहा वहीं बागवानी के क्षेत्र में किए गए प्रयास दुनियाभर में अनुकरणीय उदाहरण बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि इंडो-इजराइल समझौते के तहत राजस्थान में शुरू किए गए कार्य तीव्र गति से आगे बढ़े हैं। वहीं दूसरे देशों के लिए हमारे यह कार्य अनुकरणीय उदाहरण बने हैं।

उन्होंने कहा कि राज्यवासियों के लिए सरकार ने बहुत योजनाएं शुरू की हैं और लोगों को जागरूक होकर इन योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए।

लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीपंत सोनी ने की। इस दौरान सब-स्टेशन के लिए भूमि दान दान करने वाले श्री विकास बोकडिया, जोधपुर डिस्कॉम के अधीक्षण अभियंता श्री हवा सिंह और विभिन्न जन प्रतिनिधि व अधिकारीगण मौजूद थे।

परवन सिंचाई परियोजना भाग्योदय की सौगात लाई-मुख्यमंत्री

जयपुर, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि हाड़ोती के गांवों को नया जीवन देने वाली महत्वाकांक्षी परवन वृहद सिंचाई परियोजना की स्वीकृति भाग्योदय की सौगात लेकर आई है। निःसंदेह इस परियोजना से बारां, कोटा व झालावाड़ जिले के लोगों का जीवन खुशहाल होगा। मुख्यमंत्री शुक्रवार को बारां में कृषि उपज मंडी समिति के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस परियोजना का शिलान्यास कार्यक्रम बारां जिला मुख्यालय पर 17 सितम्बर को धूमधाम व ऐतिहासिक तरीके से होगा। उन्होंने कहा कि बारां जिले के छबडा में 13620 मेगावाट की क्षमता के सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट की शुरूआत भी जल्द होने जा रही है। जो क्षेत्र के विकास में अभूतपूर्व योगदान देगी। समारोह को संबोधित करते हुए नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश के गरीब और मिडिल क्लास के लोगों के उत्थान में कोई कसर नहीं छोड़ी है। छात्रों को लेपटॉप, टेबलेट पीसी व छात्राओं को साइकिलें मिली। बीपीएल तबके को आवास के लिए अनुदान मिला। राज्य में क्रियान्वित हुई जनकल्याणकारी योजनाएं बेमिसाल है। इनकी जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना आवश्यक है। केन्द्र सरकार ने भी खाद्य सुरक्षा का अधिनियम लाकर करोडों लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान की है। विश्व में काई भी देश ऐसी योजना नहीं बना सका।

पशुपालक बढाएं अपनी आमदनी-कृषि मंत्री

जयपुर, कृषि मंत्री श्री हरजीराम बुरडक ने पशुपालकों का आह्वान किया है कि वे राज्य सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाएं और अपनी आमदनी बढ़ाएं। श्री बुरड़क बुधवार प्रातः नागौर में लाड़नूं पंचायत समिति द्वारा पाबोलाब में आयोजित श्री हनुमान पशु मेला में पारितोषिक वितरण समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने पशुओं के लिए विभिन्न श्रेणियों में कराई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक भी वितरित किए। इस दौरान पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की ओर से संचालित पशुओं के लिए निःशुल्क दवा योजना काफी महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पशुपालक, विभागीय अधिकारियों से योजनाओं की जानकारी लें और अपनी आमदनी बढ़ाएं तभी सरकार की नीतियां सफल होंगी।

इससे पूर्व श्री बुरड़क ने सहायक निदेशक, उद्यानिकी कार्यालय का उद्घाटन भी किया। कार्यालय परिसर में आयोजित समारोह में बुरड़क ने किसानों को बागवानी से सम्बन्धित योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि किसानों को अनेक वर्षों से चली आ रही कृषि की पुरानी परिपाटी को बदल कर मौजूदा संसाधनों का प्रयोग करते हुए और योजनाओं का लाभ लेते हुए पैदावार बढ़ानी चाहिए। कृषि मंत्री ने कम लागत प्याज भंडारण संरचना के लाभान्वित 6 कृषकों को 50-50 हजार की राशि के चैक भी वितरित किये। इस योजना के अन्तर्गत चालू वर्ष में 1100 कृषकों को लाभान्वित करने का लक्ष्य है।

मुर्ती विसर्जन पर सरकार ने दिए निर्देश

जयपुर, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल ने त्योहारों के अवसर पर मूर्ति विसर्जन के सम्बन्ध में सभी जिला कलेक्टर्स को दिशा-निर्देश जारी किए हैं। निर्देशों के अनुसार सभी कलेक्टर्स को कहा गया है कि वे मूर्ति विसर्जन के सम्बन्ध में कार्यवाही करते हुए एक्शन टेकन रिपोर्ट तैयार करें और उसे मण्डल को प्रेषित करें। इस सम्बन्ध में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल द्वारा हुई सुनवाई के दौरान छत्तीसगढ़, राजस्थान व मध्यप्रदेश के प्रदूषण नियंत्रण मण्डलों के सदस्य सचिवों की उपस्थिति में दिए गए निर्देशों के अनुसार केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के दिशा-निर्देशों की अनुपालना सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय अधिकारियों से नियमानुसार कार्यवाही की अपेक्षा की गई है। इसके अनुसार सम्बन्धित अधिकारियों के क्षेत्राधिकार में आने वाले सभी जिलों के कलेक्टर्स एवं स्थानीय निकायों के अधिकारियों के साथ बैठक कर समन्वय स्थापित करते हुए दिशा निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जानी है। साथ ही विसर्जन की समुचित कार्यवाही हेतु स्थानीय निकायों को पाबन्द कराया जाना है।

महाराष्ट्र

इको फ्रेंडली मनाई गई गणेश चतुर्थी

मुंबई। गणेश पूजा के लिए बड़े-विशाल पंडाल सजाएं गए ग। भगवान गणेश की बड़ी-से-बड़ी और छोटी से छोटी मूतिर्यों से बाजार सज गया। कलाकार गणेश की प्रतिमाओं को अंतिम रुप देने में जुो। लेकिन इसबार इको फ्रेंडिली गणेश की मूतिर्यों की खासा डिमांड बढ़ गई है। मेहमान बनकर घर में विराजमान होने वाले गणपति बप्पा की इको फ्रेंडली मूतिर्यों को लोग खासा पसंद कर रहे है। लोग पीओपी यानी प्लास्टर ऑफ पैरीस से बनी बप्पा की मूतिर्यों से बच रहे थे। शाडू मिट्टी और प्रकृतिक रंगों से बनी बप्पा की मूतिर्यों की की मांग काफी बढी । दरअसल शाडू मिट्टी से बनी मुतिर्यां पानी में आसानी से घुल जाती है और प्रदुषण नहीं फैलाती। इस तरह की मूतिर्यां प्रकृतिक के लिहाज से अपयुक्त है। इससे कोई प्रदूषण नहीं होता।

पुणे: अब सिर्फ एक 'एसएमएस' और गायब हो जाएगा सड़क से कूड़ा

पुणे: अगर आप के घर के बाहर कई दिनों से कूड़ा पड़ा हुआ है और कोई भी

सफाई कर्मचारी उसे उठाने नहीं आ रहा है तो अब चिंतित होने की जरुरत नहीं है। अब पुणे नगरनिगम ने एक अनोखा तरीका इजाद किया है। अगर यह तरीके कारगर रहा तो आने वाले दिनों में सड़कें सीसे की तरह चमकेगी!

गणेश उत्सव की धूम

मुंबई। गणपति बप्पा मोरिया के नारे आज देश भर में लग रहे हैं। आखिर क्यों न हो, आज हर शहर में बप्पा जो आये हैं। जी हां देश के लगभग सभी राज्यों में गणेश चतुर्थी के मौके पर गणेश उत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। तमाम घरों, पंडालों में आज गणपति विराजमान हो रहे हैं। कहीं वो पांच दिन के लिये तो कहीं सात दिन के लिये और तो कहीं विसर्जन के अंतिम दिन तक भगवान गणेश विराजमान रहेंगे। गणेश उत्सव महाराष्ट्र का सबसे बड़ा त्योहार है। मुंबई समेत हर शहर में घर और पूजा पंडाल सज चुके हैं।

सुरक्षा के लिहाज से यूं तो कोई विशेष अलर्ट जारी नहीं किया गया है, फिर भी मुंबई पुलिस ने देश की व्यावसायिक राजधानी कही जाने वाली मुंबई में सुरक्षा के व्यापक बंदोबस्त किए बढ़ती महंगाई और बिगड़ैल मौसम का का राज्य के सबसे बड़े सार्वजनिक उत्सव के उत्साह पर कोई प्रभाव नहीं देखा ग%ाा इस समारोह को सार्वजनिक रूप से मनाने की शुरुआत 1934 में स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने की थी। गणेश पूजा का आयोजन करने वाले कई संगठन इसके आयोजन, बीमा, सुरक्षा और इससे संबंधित पहलुओं पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं।

महानगरपालिका अतिवृष्टि से प्रभावित नागरिकों को देगा आर्थिक सहायता

नागपुर। राज्य सरकार और महानगरपालिका द्वारा अतिवृष्टि से प्रभावित नागरिकों को आर्थिक सहायता के लिए केंद्र सरकार से मांगी गई मदद के बाद नुकसान की समीक्षा करने गुरुवार को केंद्रीय टीम ने उपराजधानी का भ्रमण किया। बारिश से उखड़ी सड़कों से होकर केंद्रीय टीम प्रभावित इलाकों में पहुंची। प्रभावित इलाकों के हालात देखकर केंद्रीय टीम द्वारा दोबारा रिपोर्ट मांगे जाने की जानकारी है। केंद्रीय गृहविभाग के सहसचिव गोपाल रेड्डी ने अधिकारियों को वास्तविक आंकड़े पेश करने को कहा है। इससे पहले केंद्रीय टीम ने शहर के अनेक प्रभावित इलाकों का दौरा किया। टीम ने पहले धरमपेठ कैनल रोड स्थित पुल और नाग नदी का निरीक्षण किया। फिर मानकापुर सादिकाबाद स्थित नाले की टूटी दीवार और नाले के पानी से प्रभावित नागरिकों से मुलाकात की। इस दौरान डॉ. प्रशांत चोपड़ा व नगरसेविका शीला मोहड उपस्थित थे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com